★ निज श्री कृष्ण परमात्मने नमः ★

तारतम्य जागनी माला–१५

अथ

श्रीकृष्ण पुष्पाञ्जलि

भजनमाला

प्रकाशक–

रचयिता–

कविवर विशालसिंह

'विशाल'

मूल्य : सप्रेम रु० ८–००

* अथ परात्पर ब्रह्म स्तुति *

आवोजी वाला म्हारे घेर, आवोजी वाला ।।टेक।।
एकलड़ी परदेशमाँ मुने, मूकीने कां चाल्या ।।१।।
मुने हुती नींदलड़ी, तमे सूती मूकी कां राते ।
जागीने जाऊँ ताँ पीउ जी न पासे, पछे तो थासे प्रभाते ।।२।।
कलकलीने कहुं छुं तमने, आवजो आणे क्षणे ।
म्हारा मनना मनोरथ पूरण करजो, श्री इन्द्रावती लागे चरणे ।।३।।

(श्री मुखवाणी : स्वसंवेद)

Atha Shree Krishna Pushpanjali : Bhajan Mala 1999

१२ अप्रैल, १९९९ सोमवार	संस्करण प्रथम
वैशाख कृष्ण ११, २०५६	प्रतियाँ–१०००
(नव विजयाभिनन्द शाका सर)	श्री विजयाभिनन्द
कलियुग सम्वत् :	बुद्धजी शाका : ३२२

पुस्तकें प्राप्ति स्थान—

- रघुवीर सहाय शर्मा पचावली पो०दतावली(इटावा)-206002
- विशालसिंह शाक्य, निवादा धाँदू पो० मड़ोकमीत (सहार) जि० औरैया–206248
- पं० खेमराज शर्मा धर्मोपदेशक, धाम पन्ना (म०प्र०)-488001

प्रकाशक—श्री कृष्ण प्रणामी धर्म परिषद्, जनपद इटावा (रजि०)
वितरक– महाबली छत्रसाल दल
मुद्रक—शिव प्रिंटिङ्ग प्रेस, इटावा

❋ निज श्री कृष्ण परमात्मने नमः ❋

तारतम्य जागनी माला-१५

ब्रह्मलीलालीन परमहंस स्वामी पं० मोतीदास दीक्षित
(बराहार-बिधूना) की पावन स्मृति के परिवेश में
सादर समर्पित-

अथ श्री

❋ कृष्ण पुष्पाञ्जलि ❋

भजनमाला

रचयिता-

कविवर विशालसिंह 'विशाल'

सम्पादक द्वय-

★ रघुवीर सहाय शर्मा 'सचिव'

★★ श्यामकिशोर प्रणामी 'उप सचिव'

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म परिषद, जनपद द्वय इटावा-औरैया (रजि.)

★ निज श्री कृष्ण परमात्मने नमः ★

—: नम्र निवेदन :—

विश्व-संस्कृति में गीत विधा हर भाषा भाषी जनों की अमूल्य धरोहर है। चित्त में शान्ती एवं व्याकुल मन को शान्ति देने में एक मात्र गीत स्वर लहरी ही अनुपम औषधि है। कविवर विशाल जी रचित प्रस्तुत पुष्पाञ्जलि हिन्दी काव्य धारा की एक सशक्त कृति है। आप सभी से विनम्र निवेदन है कि इस पुस्तक को आत्मिक श्रद्धा एवं उल्लिसित हृदय से जरूर आद्योपान्त गुनगुनायें। अवश्य लाभ मिलेगा। प्रणाम ! —प्रकाशक

❀ परिषदीय संरक्षकों की शुभ कामना ❀

प्रस्तुत पुस्तक "अथ श्री कृष्ण पुष्पाञ्जलि-भजनमाला" का स्तुत्य प्रकाशन देखकर हम सभी को अतिशय आनन्द हुआ है। परिषद द्वारा "तारतम्य जागनी माला" शृङ्खला के अन्तर्गत निरन्तर प्रकाशित हो रही भजनमाला ग्रन्थ समूचे जनमानस को आत्मिक परमानन्द देंगी ऐसा मेरा विश्वास है। अस्तु हमारी सभी को हार्दिक शुभ कामनाएं।

* श्री१०८श्री नन्दकिशोरदास महाराज,श्री चेतन धाम गंगाधाम बि०
* श्री१०८श्री राजकिशोरदास महाराज सत्संग धाम पटना-१ बिहार
* श्री१०८श्री ब्रह्मज्योति महाराज मुकुन्दधाम मलिहाबाद(लखनऊ)
* श्री१०८श्री आनन्द स्वरूप महाराज आनन्द धाम गोहन(जालौन)
* भक्तभूषण माधवदास जी महाराज, रावतपुर याकूबपुर (औरैया)
* धर्मसेवी लज्जाराम(लालदास महाराज) यशोदानगर इटावा उ.प्र.
* महाराज प्रहलाद दास शास्त्री,जटियापुर-सिकन्दरा(कानपुर दे०)
* स्वामी परमानन्द महाराज, परमानन्द आश्रम, इकदिल (इटावा)
* श्रीयुत् श्यामकिशोर जी प्रणामी, बल्लापुर जि० औरैया-106121

❋ सम्पादकीय ❋

प्रस्तुत पुष्पाञ्जली के सम्पादन करते समय ऐसा अहसास हुआ कि कविवर विशाल जी के काव्य पर एक सम्यक् दृष्टि डाली जाये और उनके उच्च कोटि के साहित्य को जनमानस के सम्मुख सुचारु रूप से प्रस्तुत किया जाय, ताकि हिन्दी साहित्येतिहास में विशाल जी द्वारा की जा रही अनुपम सेवा जनमानस में प्रवाहित हो सके अतैव किसी मूर्धन्य साहित्यकार एवं समीक्षक से एक समीचीन भूमिका लिखवाकर इसमें संग्रहीत किया जाये। लेखन एवं सम्पादन में सिद्धहस्त तथा बहुप्रशंसित श्री छत्रसाल काव्याञ्जलि के सफल सम्पादक 'धर्मभूषण' कुञ्जबिहारी सिंह धर्म विशारद एम०ए० से इस संदर्भ में अनुरोध करने पर प्राप्त भूमिका को प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशन किया गया है।

कविवर विशाल जी भाव पक्ष के प्रमुख रचनाकार हैं। इसकी छटा प्रस्तुत पुस्तक के अतिरिक्त उनके महाकाव्य "अथ श्री कृष्णानन्द सागर" में देखी जा सकती है। कवि की लेखनी* संसार में सुसुप्त आत्माओं को जागृत कर परब्रह्म के अखण्ड आनन्द दिलाने के लिए दुन्दुभि उद्घोष कर रही है, इन्हीं पंक्तियों की प्रेरणा से प्रस्तुत प्रकाशन आप सभी के सम्मुख है।

प्रस्तुत प्रकाशन में शीघ्रता वस, दृष्टि दोष एवं प्रेसगत त्रुटियों के लिए हम श्रोताओं, पाठकों एवं रचनाकार से क्षमा प्रार्थी हैं। ●

प्रणाम,

—रघुवीर सहाय शर्मा सचिव,

● वैशाख कृ०एकादशी : 2056 —श्यामकिशोर प्रणामी उपसचिव,

---

* "बेला ये जागृति की सुखद, दो छोड़ निद्रा साथ जी।
सुधि कीजिये निजधाम की, तुमको नवाऊँ माथ जी॥
तुम वासना हो धाम की, मैं जान अपना कह रहा।
पीजे सुअमृत तारतम, जो आज जग में बह रहा॥"

* निज श्री कृष्ण परब्रह्मणे नमः *

भूमिका

रचनाकार कृष्ण भक्ति में सराबोर एक साहित्य समर्पित काव्य प्रतिभा के धनी प्रतीत होते हैं, उनके काव्य की हर पंक्ति में अनुपम काव्य लालित्य झलक रहा है। उनमें मध्यकालीन एवं रीतिकालीन भक्ति कवियों की स्पष्ट छाप झलक रही है। कबीर, सूर, तुलसी, केशव, मुकुन्द, छत्रसाल सरीखे प्रातः स्मरणीय महाकवियों की काव्यकलात्मकता उनके साहित्य में विद्यमान है। कबीर के दोहे, सूर की पदावलियाँ, तुलसी की चौपाइयाँ, केशव का कठिन काव्य, मुकुन्द की वाणी एवं छत्रसाल के कवित्त आदि के नमूने महाभाग कविवर विशाल जी की अन्तरात्मा में सागरवत् हिलोरे ले रहे हैं। शुद्ध परिमार्जित एवं आधुनिक शब्दावली-उनके काव्य प्रतिभा को विशेष आयाम दे रही है। उनकी रचनाओं में "विशाल" चित्रानन्दन एवं 'श्रीलाल के लाल' का प्रयोग छाप के रूप में मिलता है, कारण-उनका उपनाम विशाल है तथा वह श्री लालमन महाराज एवं चित्रावती के पुत्र हैं अतैव उनके काव्य में चित्रानन्दन, श्रीलाल के लाल व श्रीलाल के नन्दन का प्रयोग असम्भावी रहा है जो उनकी काव्य प्रतिभा को चार चाँद लगा रहा है। वे मूलतः श्रीकृष्ण भक्त हैं, उनकी अन्तरात्मा में ब्रज-रास के लीला चरित्र समाये हुए परिलक्षित होते हैं निम्न चौपाई उनके इस व्यक्तित्व को मुखरित कर रही है—

"सुख सुधा जिमि अलहि परागा। कृष्ण कथा तिय मम अनुरागा।।"

धन्य है कवि का जीवन दर्शन– जिन्होंने हिन्दी साहित्येतिहास के लिए अनुपम साहित्य दिया है। प्रस्तुत कृति लघु अवश्य है परन्तु गागर में सागर की भाँति समाहित है।

श्रीमद्भागवत महापुराण की दशम स्कन्ध की पावन कथाएँ, खास कर प्रारम्भ से लेकर उधव गोपी सम्वाद (अ० ४७) पर्यन्त की कृष्ण कथाएँ ही रचनाकार ने आधारभूत बनाई हैं (पद सं०३/२२ पृष्ठ २३ से ४० तक) इसके पश्चात की नहीं। वे ब्रज-रास के कृष्ण स्वरूप को ही इष्ट मानते हैं बाद के स्वरूप को नहीं, जैसा कि उनके कवित्त से स्पष्ट है–

'तज के ब्रजवास गये जब से घनश्याम,
लौट आये न ब्रजधाम ऊधौ पाती पठाई है।
प्रीत की अनीति ते प्रतीत अब ऐसो भयो,
वह श्याम कोई और बसे मथुरा जो जाई है॥
प्रीतम हमारो मुरली मोर पृच्छवारो,
जिन इन्द्र मान मारो सुन्दर रासहू रचाई है।
'चित्रा के नन्दन' श्री नन्द नन्दन जू,
मेरो गिरधारी उरधारी भया आई है॥११(पृ.१७)

उक्त कवित्त के "वह श्याम कोई और बसे मथुरा जो जाई है" चरण से स्पष्ट है कि ब्रज के कृष्ण और मथुरा के कृष्ण में स्वरूप भेद है फलतः गोपियों ने मथुरा जाना उचित न समझा जबकि वृन्दावन और मथुरा के बीच की दूरी नगण्य सी है। ब्रज के कृष्ण परमधाम बिहारी हैं और मथुरा के कृष्ण परमधाम बिहारी के अंश गोलोकीनाथ श्रीकृष्ण हैं अतैव रचनाकार ने उक्त के अन्तिम चरण "चित्रा के नन्दन श्री नन्द नन्दन जू, मेरो गिरधारी उरधारी भयो आई है" से स्पष्ट कर दिया है कि ब्रजगोपियाँ के प्राणपति केवल ब्रजबिहारी गिरधारी श्रीकृष्ण ही हैं जिन्होंने अपनी किशोर लीला का रास मण्डल के मध्य उन्हें रसपान कराया था।

सूरदास ने जिस प्रकार से उधव और गोपियों को सम्वाद का मनोहारी चित्रण किया है उसी प्रकार से 'विशाल' ने भी इस सम्वाद को तार्किक एवं भाव पूर्ण ढंग से प्रस्तुत करके पाठकों की अन्तरात्मा में अविस्मरणीय छाप छोड़ी है[*]। देखिये इस सम्बन्ध में एक नमूना—

'लाये सन्देशो भले ऊधव, राधे तब विहँस अस बैन उचारी।
रहे याद सु ज्ञान प्रवीण महान, आये हो प्रेम कुटीर मंझारी॥
योग की पूंजी संभाल रखो, जाकी लेवें न छोन ब्रज की नारी।
ब्रजवाल 'विशाल' विरहानल में, जल जाय न ज्ञानकी ग्रन्थ तुमारी॥

रचनाकार ने परब्रह्म श्रीकृष्ण (श्रीराज) की सेवा में आठों प्रहर की सेवा सम्बन्धी रचनाओं का भी प्रणयन किया है जिसमें मंगलाचरण, शृङ्गार, आरती, लीलागायन, राजभोग, आरती, उत्थान व शयन सम्बन्धी रचनायें प्रमुख हैं। "श्री राज चरण भज रे, (पृष्ठ १७) आरती प्राणन प्यारे की, श्री केशव नन्द दुलारे की (पृ०१८), श्री राज परमानन्द पूरण ब्रह्म प्रभु परमेश्वरम्"। वस्तुतः विशाल की साधना पद्धति श्री प्राणनाथ सम्प्रदाय के सामीप्य जान पड़ती है क्योंकि परमधामबिहारी श्रीकृष्ण को इन्होने श्रीराज के नाम से पुकारा है। सूरदास की रचनाएँ पुष्टि मार्ग के अन्तर्गत बल्लभ मताधीन है। दोनों के आराध्य श्री कृष्ण ही परब्रह्म बताये गये हैं। विशाल की विशिष्ट ब्रजगोपियाँ परमधाम से अवतरित हैं जबकि सूरदास की गोपियाँ गोलोकधाम से अवतरित राधा की सभी अंगभूता हैं[**]। रचनाकार ने गोपियों को परकीया नहीं, स्वकीया पत्नी के रूप में ही वर्णित किया है उन्होंने परकीया

---

[*] सूरदास के परब्रह्म कृष्ण की नित्यलीला गोलोक में होती रहती है, इनके कृष्ण गोलोकीय कृष्ण के अंश है जो विष्णु के बैकुण्ठ से बहुत ऊपर है जबकि विशाल के परब्रह्म कृष्ण अखण्ड परमधाम में लीलामग्न हैं इनके कृष्ण परमधाम बिहारी कृष्ण (श्रीराज) के आवेश से युक्त है और जो गोलोक के कृष्ण के धाम से आगे-बहुत ऊपर है।

[**] दृष्टव्य—सवैया सं० ३५, पृष्ठ ११,

प्रेम को लौकिक वातावरण की अश्लीलता से प्रथक कर एक विशुद्ध आध्यात्मिक रूप प्रदान किया है और इस प्रकार उसका ऊर्जस्वीकरण करके मानव समाज को पततोन्मुख होने से बचा लिया है।

"धाम अखण्ड की ब्रह्मप्रिया, तुम पहले ब्रज माँहि पधारी।
संग धनी तब आये तहाँ, यशुदा के लला श्री कुञ्जबिहारी।।
गोपिन के प्रीतम प्रिय माधव, श्रीकृष्ण सों प्रेम रह्यो अतिभारी।
गुण गावें सदा वह मोहन के,क्षण एकहु श्याम न जाय बिसारी।।२८।।'

उक्त रचना में 'गोपिन के प्रीतम प्रिय माधव, (पृ०१०)' में स्वकीया का भाव स्पष्ट झलक रहा है।

उसी रचनाकार का काव्य अजर अमर रहता है जिसके द्वारा रचित नीति उपदेशात्मक सम्बन्धी रचनायें लौकिक एवं पारलौकिक जीवन के लिए ग्राह्य रहती हैं। विशाल के काव्य में ऐसी रचनाओं का विपुल प्रणयन हुआ है। इस सम्बन्ध में सवैया सं० २१ (पृ०९) स ४१, ४२ (पृ०१२-१३) दृष्टव्य हैं।

"वारि बिना सरिता सूनी, अरु सूनी पति बिन नार कहावे।
सूना सरोवर हंस बिना, सुगन्ध बिना नहिं सुमन सुहावे।।
सूनी रैन सु चन्द्र बिना, अरु दीप बिना घर सूनो दिखावे।
प्रेम बिना प्रभु के सु 'विशाल' त्यों ही सूनी नर देह कहावे।।२१।।"

काव्य समीक्षा—में काव्य की आत्मा और शरीर दोनों का विश्लेषण किया जाता है। काव्य की आत्मा उसके भाव और विचार हैं तथा शैली उसका शरीर है। विशाल के काव्य में इन दोनों का समीचीन निरूपण हुआ है। उनके काव्य में अलंकार रस छन्दादि (गुणों) का भरपूर प्रयोग हुआ है, उनके काव्य में खड़ी बोली के शब्दों का बाहुल्य है। यत्र तत्र ब्रजभाषा, अवधी, कनौजी, बुन्देली भाषा के शब्दों का भी प्रयोग देखने को मिलता है। चूंकि रचनाकार का जन्म स्थल जनपद इटावा, भाषाओं का संगम है फलतः भाषा साहित्य की दृष्टि से उनका काव्य समृद्धिशाली बना

है। उनकी बृहद रचना श्री कृष्णानन्द सागर (महाकाव्य) इसका प्रमाण है।

विशाल की गीत शैली वीरगाथा काल, मध्यकाल और रीति-कालीन प्रधान कवियों से प्रभावित है। विशेषकर आध्यात्मिक रचना करने वाले कवि जायसी कबीर, सूर, तुलसी, मुकुन्द छत्रसाल आदि का विशाल के काव्य पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है, आधुनिक कवियों की परिपाटी से उनका ज्यादा तादात्म्य नहीं है। विशाल की रचना में उद्भावना शक्ति, चमत्कार पूर्ण कल्पना, चित्रमयता, व्यंग, हास्य-प्रियता व प्रसाद गुणों की अभिव्यक्ति है।

प्रस्तुत कृष्ण पुष्पाञ्जलि की कथावस्तु सूक्ष्म है, विविधा भी है परन्तु उसे विस्तार देने के लिए अलंकारों का प्रयोग अनिवार्य रूप से सहायक बन पड़ा है। पूर्ववर्ती कतिपय कविगण जिस प्रकार से अनुप्रासालंकार के आकर्षण-पाश में बुरी तरह जकड़ गये और वे अपनी रचनाओं को शब्दों के आडम्बर से ओत प्रोत कर भावों की निर्जीव मूर्ति खड़ी करते रहे, उस प्रकार विशाल जैसा भावुकता से पूर्ण कुशल रचनाकार* कैसे कर सकता था? उनकी रचना सर्वत्र भावना युक्त, सजीव और अत्यन्त रसमयी है। अलंकारों ने उसके परिवेश-विन्यास एवं भाव-लालित्य को समृद्धिशाली बनाया है।

प्रस्तुत पुष्पाञ्जलि में अलंकारों की प्रचुर मात्रा विद्यमान है। विशाल जी अलंकार प्रयोग करने में दक्ष हैं फलतः उनके द्वारा रचित प्रत्येक छन्द, सवैया, कवित्त, दोहे, पद, कुण्डलियाँ अलंकारों से युक्त हैं। प्रस्तुत पुष्पाञ्जलि में निम्न रचनाओं में अलंकारों का अनुपम चित्रण देखते ही बनता है। यथा—

---

* "सुरमसुधा जेहि भाँति प्रिय, मधुपाहि पुष्प पराग।
कृष्ण कथा में मोर तिम, रहे नित्य अनुराग ॥२॥" (पृ० ३)

तोय पुत्र तासु सुत के सुत, तासुत भख मुख कीर्ति भली है।
मीन सुता सुत तासुत नासा, दन्त की छवि मनो कुन्द कली है॥
मीनाक्ष मनोहर बाँकी छटा, अरु अधर विलोकत बिम्ब फली है।
श्रीलाल के लाल विशाल निहाल, हिये नन्दलाल सुकीर्त भली है॥६॥

× × — × ×

खोजत वेद पुराण थके, नहि पावे पार अगम्य बतावें।
सोई कृष्ण यशुदा जननी के, भय से नैनन नीर नहावें॥१५॥

जोहत सुबाट अरु विलोकत बटोई सदा,
अजया का भोज नाहीं अजहूँ पठाई है।
शशि रिपु बरस और युग वर सूर्य रिपु,
हर रिपु भयो अति मोय दुखदाई है॥
वेद अरु नक्षत्र ग्रह जोर के अर्ध कर,
सोई अब खाऊँ ऐसी मोर मन भाई है।
व्यथित 'विशाल' ब्रजनारी बिहारी बिन,
बनिता विचारी बियोगिन बनाई है॥१०॥

विशाल के काव्य में बाह्य सौन्दर्य का भी अनूठा चित्रण है। परब्रह्म कृष्ण की बाल छवि पर उनकी पैनी नजर का दिग्दर्शन निम्न कवित्त में उपस्थित है।

"मोर मुकट धारी कर बाँसुरी सुधारी,
तन पीत वसन प्यारी छवि अनुपम तुम्हारी है।
भाल सु 'विशाल' हिये बीच सोहे बनमाल,
गज शावक सी चाल मन लागत सु प्यारी है॥
सुन्दर सुजान सोहे मन्द मुस्कान,
अरु मुरली की तान सुन मोर मनु हारी है।
सुन्दर बदन पर श्यामले से तन पर,
नन्द के नन्दन पर लगन हमारी है॥१०॥"

विशाल के काव्य में आन्तरिक सौन्दर्य का भी चित्रण मिलता है। आन्तरिक सौन्दर्य की प्रधानता सूर के काव्य में अत्याधिक हुई है फिर भी विशाल का काव्य इसी परम्परा के निर्वाहन में सफलता की सीढ़ी पर आरूढ़ है[*]। विशाल का विप्रलम्भ शृङ्गार वर्णन उच्च कोटि का है। आचार्यों ने संयोग से विप्रलम्भ शृङ्गार को उच्च माना है क्योंकि वास्तविक प्रेम का परिचय वियोगावस्था में ही होता है। प्रेमी-प्रेमिका के प्रेम रूपी स्वर्ण का खरा और खोटा होना वियोग की कसौटी पर कसने से ही मालूम पड़ता है। अति गम्भीर, तीव्र एवं तड़पा देने वाली विरहजन्य वेदना का शाब्दिक चित्रण ही विप्रलम्भ शृङ्गार है। "वेद अरु नक्षत्र ग्रह जोर के अर्ध कर, सोई अब खाऊँ ऐसो मोर मन भाई है॥" विशाल की इन पंक्तियों में विप्रलम्भ शृङ्गार का अनूठा चित्रण हुआ है।

आचार्यों ने वियोग के अन्तर्गत एकादश अवस्थाओं का वर्णन किया है-अभिलाषा, चिन्ता, स्मरण, गुण कथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता, मूर्छा और मरण। इन अवस्थाओं के अतिरिक्त भी वियोग की दशाओं का चित्रण विशाल ने अपने महाकाव्य ग्रन्थ में किया है। अनिद्रा अर्थात विरह में नींद नहीं आती, स्वप्न दशा अर्थात दिन भर के चिन्तन और मनन से स्वप्नों का संचरण होना। जो कृष्ण-जाग्रत अवस्था में हृदय नेत्र और जिह्वा पर विराजमान रहते हैं, वही नींद में स्वप्न बन कर मिलन जैसा सुख देते हैं। वियोग में योग का चित्रण विशाल ने बड़ी चतुराई से कर दिखाया है, गोपियां श्याम के अभाव में भी श्याम का दर्शन पाने को आतुर हैं और कवि कल्पना ने इसे सिद्ध कर दिखाया है।

---

[*] काजल कोर के बीच निवास, भयो 'विशाल' सोय गुण भारो।
कजरारी अंखियन में बसे, नित याही सो श्याम अंग भयो कारो॥१३

"मोय वेग दिखाओ योग सखी, कैसो वह तुममें श्याम तुम्हारो।
श्री राधे श्याम का ध्यान कियो, प्रकट्यो सखि अंग में नन्द दुलारो॥
जेहि सखि उत उगली राधे करें, उतही संग दीखै श्याम प्यारो।
लख 'विशाल' दंग हुये ऊधव, राधे हे धन्य सु धन्य उचारो॥३१॥"

संयोग वात्सल्य—रस की निष्पति में स्थायी भाव, विभाव आलम्बन, आश्रय और उद्दीपन) अनुभाव और संचरी भावों की अपेक्षा होती है। संयोग वात्सल्य रस में बाल प्रेम की ही प्रधानता रहती है। विशाल ने बाल चेष्टाओं का हृदयग्राही चित्राङ्कन किया है।

"खेलत कृष्ण यशोदा आँगन, होत मगन मन में महतारी।
कबहूँ मात की गोद में खेलत, नाचत कबहूँ बजावत तारी॥
कबहूँ प्रतिबिम्ब निहार डरें, अरु माँगत कबहूं चन्द्र निहारी।
नन्दलाल के हाल 'विशाल' लखे, तब से तन की सुधबुद्धि विसारी॥८॥

रासलीला—आचार्यों का मत है कि रास शब्द रस से बना है 'रसो वै सः' अर्थात् परब्रह्म स्वयं रस रूप है, आनन्द रूप है। वस्तुतः रस रूप ब्रह्म केन्द्र है और उसकी परिधि है ब्रह्माण्ड का चक्र, जिसे उसकी लीला कहा जाता है। रासलीला का मूल्याँकन आचार्यों ने अनेक रूपों में किया है फिर भी सूर का रास चित्रण अलौकिक एवं अद्वितीय है। विशाल ने भी रासलीला का सजीव चित्रण किया है* फर्क इतना है कि सूर ने रासक्रीड़ा का होना मात्र इसी वृन्दावन में माना है जब कि विशाल ने अखंड रासलीला की भूमिका ब्रह्माण्ड के परे कही है और उन्होंने व्यवहारिकीय रासलीला का होना इसी वृन्दावन में माना है।

"बासुरी बजाई योगमाया प्रकटाई,
कीन्हीं न विलम्ब ऐसी करी प्रभुताई है।
कालमाया नाश ब्रह्माण्ड को विनाश,
जिमि भानु के प्रकाश से रजनी नशाई है॥

---

* दृष्टव्य : कविस सं० ५, ६, ७, ८ एवं ९

अनुपम अपार नाहीं शोभा को सुमार,
राधा माधव बिहार को रासमंडल रचाई है।
रचना 'विशाल' जहाँ जाय मिली ब्रजबाल,
रास मंडल में हाल सखि दिव्य तनपाई है ॥८॥

उक्त कवित्त में "कालमाया नाश ब्रह्माण्ड को विनाश, × × × राधा माधव बिहार को रासमंडल रचाई है" कहकर विशाल ने परम गूढ़ रहस्यों का खुलासा करके अनूठा चित्रण किया है। वस्तुतः रासलीला, विश्व की विराट कार्य प्रणाली का मधुर आभास है, जगज्जीवों के लिए इनका चिन्तन परमात्मा को प्रणाम करना है। इसका रूप क्षणिक नहीं, शाश्वत है। रासलीला का वास्तविक दिग्दर्शन निष्कलङ्क परमात्मा प्राणनाथ प्रणीत श्री ५ स्वसंवेद के रास स्कन्ध के अन्तर्गत विद्यमान है। लगता है 'विशाल' ने विषय सामग्री का चयन इसी से किया है।

विशाल, सूर की भाँति प्रमुख रूप से भाव-प्रधान कवि हैं। वह घटनाओं के घटाटोप में कहीं नहीं पड़ते अपितु जहाँ कहीं पौराणिकता, ऐतिहासिकता व सांसारिकता का जिक्र आ जाता है, वहाँ वे बस दोहों, चौपाइयों--आदि में उसे चित्रण कर आगे बढ़ गये हैं*।

शब्द एवं भाव, काव्य कला के दो पहलू हैं। शब्द-सौन्दर्य प्रधान काव्य कला संगीत कला के समान ही अपना-अपना प्रभाव व आकर्षण डालता है परन्तु भाव प्रधान कविता-संगीत के आकर्षण व प्रभाव से भी ऊपर कही गयी है अतैव भाव प्रधान कविता को

* दोहा- प्रकटे कृष्ण हैं जेल में, गोकुल पहुंचे आय।
यशुदा है बड़भागिनी, पुत्र हुये ब्रजराय ॥ (पृ०२३)

शब्द प्रधान कविता से उच्च स्थान प्राप्त है। शब्द आकाश का गुण है तो भाव चेतना तन्त्र से सीधा सम्बन्ध रखता है। शब्द आकाश-गामी है तो भाव आत्मागामी। अतैव विशाल ने काव्य में भाव की प्रधानता को प्रमुख स्थान दिया है, मूलतः उन्होंने रचना का लक्ष्य भावोन्मुखी बनाया है। इस सन्दर्भ में देखिये विशाल का प्रस्तुत कवित्त—

"स्याम सात साल के गिरिराज सात कोस को,
दिवस सात धारो कियो काम भारी है।
नन्द लाल वारो 'विशाल' शैल भारो,
शंका महान गोपी गोप जन बिचारी है॥
वृषभान की कुमारी हँस बैन अस उच्चारी,
कहा बड़ो काम कियो कुञ्ज के बिहारी हैं।
सुनो सखी—मेरी बात हम—नाही गरुआत,
गिरहुं समेत उर धारे गिरिधारी हैं॥४॥"

विशाल ने 'हल नाही गरुआत, गिरहुं समेत उरधारे गिरिधारी हैं' में अत्यधिक भावों की अभिव्यञ्जना दर्शायी है। विशाल का काव्य अन्तरात्मा का काव्य है, जो अन्तर के तार को उद्दोलित करने वाला है जिसके उद्दोलन से बुद्धि निर्मल, मन विकसित, प्राण पुलकित एवं शरीर सुखानुभूति पाकर आनन्दित हो उठता है। कृष्ण भाव को हृदय में सागर भरने वाले विशाल जी वस्तुतः काव्य जगत की अमूल्य एवं विशाल धरोहर है। भावी समय उनके काव्य का अवश्य ही समीचीन निरूपण करेगा।

सूर के काव्य में परब्रह्म कृष्ण की लीलास्थली ब्रजभूमि का वर्णन अवश्य हुआ है परन्तु परब्रह्म के अखण्ड धाम का वर्णन नहीं मिलता है जबकि विशाल के काव्य में परमात्मा के दिव्य अखण्ड

परमधाम का भी वर्णन मिलता है। इस दृष्टिकोण से बिशाल का काव्य साहित्य, हिन्दी साहित्येतिहास में अनुपम अभिवृद्धि करता है, उनके काव्य से ऐसा लगता है कि मानो वे परमात्मा के धाम का आँखों देखा चित्रण दिव्यदृष्टि से कर रहे हों। वर्णन में भावों की प्रमुखता है जो अत्यन्त हृदयग्राही है। उस धाम की ब्रह्मआत्माओं को सापेक्ष बनाकर विशाल ने जो कुछ कहा है, वह काव्य धारा बन कर अध्यात्म जगत की अक्षुण्य निधि बन पड़ा है।*

"सखि याद करहु निजधाम जहाँ, पक्ष पच्चीस परम सुखकारी।
धाम तलाब निकुन्ज निरख, अरु नहर महावन को छवि प्यारी॥
माणिक गिरि पुखराज जहाँ, यमुना सरि चौगान सु भारी।
अष्ट सु भूमि 'विशाल' तहाँ, अरु सागर अष्ट सु लेव निहारी॥२२॥

निःसन्देह विशाल ने जगज्जीवों के लिए परब्रह्म के आनन्द को अनुभूति कराने का जो प्रयास किया है, वैसा विरले कवि हो कर पाये हैं, तभी उनके काव्य को उच्च कोटि में गिना जाता है। ऐसे महान कविवर विशाल जी को निम्न शब्दों में याद किया जावे, तो उसमें कोई अनुचित नहीं है।

" 'सूर' सूर 'तुलसी' ससी, उडुगन 'केशवदास'।
अब लाल के लाल 'बिशाल' कवि, करत विशाल प्रकाश॥" **

× × — × ×

वस्तुतः परमात्मा श्री कृष्ण जी के प्रति पुष्पाञ्जली समर्पित करती हुई यह एक स्तुत्य कृति है।

—धर्मेन्द्र—

* सम्वत सर : २०५६
** १८-३-१९९९ गुरुवार

* दृष्टव्य : सवैया सं० २३ से २६ (पृष्ठ ९ से १०) तक

❀ श्री कृष्ण पुष्पाञ्जलि ❀

—'विशाल'

卐 निज श्री कृष्ण परमात्मने नमः 卐

* अथ श्री कृष्ण पुष्पाञ्जलि *

-: स्तुति :-

श्रीराज परमानन्द पूरण ब्रह्म, प्रभु परमेश्वरम् ।
अद्वैत अक्षरातीत, सच्चिदानन्द घन सर्वेश्वरम् ॥
विनवत तुम्हें करजोर कर हे, नाथ मम प्रीतम परम् ।
श्री श्यामा जी राज छबि करू, वास मम मन मन्दिरम् ॥१॥

श्री कृष्ण आनन्द कन्द, गोकुलचन्द यशुदा नन्दनम् ।
ध्यावहिं सदा जेहि ध्यान धर, शिव शेष मुनिजन रंजनम् ।
प्रकटे सोई प्रभु आय के, परब्रह्म पूरण रूपकम् ।
धन भाग्य यशुदा नन्द के, ब्रह्म खेलता जिन मन्दिरम् ॥२॥

बलिहार कोट काम छवि पर, रूप श्यामल सुन्दरम् ।
उर माल भाल विशाल तन, सोहे परम पीताम्बरम् ॥
शोभा परम मुख मण्डल, शुभ नासिका अरुलोचनम् ।
बन्शी विभूषित हस्त अरु, श्रवण सुन्दर कुन्डलम् ॥३॥

हरण भूतल भार प्रभु, खल दैत्य वंश निकन्दनम् ।
कर धार गिरवर तुम लियो, अरु मान सुरपति मर्दनम् ॥
श्री राधेश्वरी मिल रास कीन्हो, बिहार बृन्दा काननम् ।
करु वास मम उर आयके, निज राधिका नटनागरम् ॥४॥

श्री रासेश्वर रूप जो प्रकट्यो, नगर नवतन परम् ।
दीयो दरश सुरचन्द को, निज अंगना केहि कारणम् ।।
भाख्यो स्वमुख से तारतम, निज कृष्ण पूरण रूपकम् ।
प्रणवों से पुनि-पुनि आपको, करु बुद्धि मम प्रभु निर्मलम् ।।५।।

बन्दहु पुरी नवतन सुखद, श्री देवचन्द्र सदगुरु परम् ।
श्री प्राणनाथ केशव सुवत, महामंगल ज्ञान स्वरूपकम् ।।
ध्यावहुं पुरी पद्मावती, क्षत्रशाल वर जहँ राजतम् ।
कोटि बार विशाल विनवहुं, गुरु पावन पद पंकजम् ।।६।।

* प्रार्थना *

कुन्डलिया १-स्वामी मेरे आत्मपति, श्री अक्षरातीत सुनाम ।
श्रीराज श्यामा सहित, हृदय बसहु सुखधाम ।।
हृदय बसहु सुखधाम, विनय मेरी सुन लीजो ।
अपनो हो जन जान, बुद्धि मम निर्मल कीजो ।।
मैं हूं बुद्धि विहीन, ज्ञान दो अन्तरयामी ।
कहत पुकार विशाल, टेर सुन लीजो स्वामी ।।

कुन्डलिया २-राधा हे राधारमण, कृष्ण चन्द्र ब्रजराज ।
कठिन अगम भवसिंधु में, तुम्हरे चरण जहाज ।।
तुम्हरे चरण जहाज, नाथ मोय पार लगाओ ।
करहु कृपा की कोर, कृष्ण जी ज्ञान बताओ ।।
विनवत दीन विशाअ, होय न स्वामी बाधा ।
मम उर करहु बिहार, सहित श्री मोहन अरुराधा ।।

कुन्डलिया ३–श्री प्राणनाथ सद्गुरु धनी, श्री देवचन्द्र जी नाम।
राह बताई धाम की, प्रकट कियो निजनाम॥
प्रकट कियो निजनाम, अगम भव तारन हारो।
तुम्हें नवाऊँ माथ, काज अब मेरो सारो॥
भरहु ज्ञान रस बोर, हृदय के बीच हमारे।
करहु बुद्धि मम विमल, विशाल है शरण तुम्हारे॥

कुन्डलिया ४–बार बार विनवहुं चरण, सद्गुरु दीन दयाल।
तुम्हरे चरण प्रताप तें, भये कौड़ी से लाल॥
भये कौड़ी ते लाल, गुरू की महिमा भारी।
तारतम्य दे मोय, जगाई आतम प्यारी॥
विनवत दीन विशाल, लई है गुरु पद रज सिरधार।
निर्मल कीजो बुद्धि, विनय यह मेरी बारहिं बार॥

* भक्ति–दोहे *

सुमन सनेही मधुप जिम, अरु मणि प्रेमी व्याल।
कृष्ण मनोहर रूप के, प्रेमी सदा विशाल॥१॥
मुरन सुधा जेहि भाँति प्रिय, मधुपहि पुष्प पराग।
कृष्ण कथा में मोर तिम, रहे नित्य अनुराग॥२॥
हे राधा राधा रमण, आनन्द घन सुख धाम।
नील वसन मुरली सहित, मम उर करहु मुकाम॥३॥
ताको और न भावही, चढ़ा श्याम जेहि रंग।
रंगी श्याम जो कामरी, चढ़े न दूजो रंग॥४॥

रसना रट निजनाम नित, पाना प्रभु को जोय ।
पिया मिलन तब जानियो, जब चातक गति होय ॥५॥
सांचा प्रेम लगाइये, जैसे चांद चकोर ।
टेर सुनेंगे अवश्य ही, कहुदिन नन्द किशोर ॥६॥
दुख रूपी संसार है, यामें आनन्द नाय ।
परमानन्द कहीं और है, बिन गुरु मिल है नाय ॥७॥
कृष्ण-कृष्ण रसना रटो, धरो उन्हीं का ध्यान ।
कहु दिन नन्दकिशोर के, भनक पड़ेगी कान ॥८॥
हम चकोर प्रभुचन्द्र तुम, चितवत ओर तुम्हार ।
दिन-दिन बाढ़े प्रीत सभ, आस विशाल हमार ॥९॥
जगत गरल सम जानियो, अमिय कृष्ण गुणगान ।
चढ़ा जहर जो विश्व का, अमृत कीजै पान ॥१०॥
नहिं पराग नहि मधुरमधु, नहिं अमृत की खान ।
अलि बीधो क्यों कली सों, अस्त होन को भान ॥११॥
तजी कली नहिं भ्रमर जो, निशा समय को जान ।
तो अलि तोको कलि सहित, ग्रसे काल बलवान ॥१२॥
रात माँहि कामी लगे, अरु जागत है चोर ।
या जागत कवि भक्तजन, जिन लगी कृष्ण सो डोर ॥१३॥
मन को मधुकर कीजिये, कृष्ण कमल दल जान ।
प्रेम पराग पीजै सदा, जो चाहो कल्यान ॥१४॥
चरण धरत चितलावहो, भावे नींद न शोर ।
हेरत कवि अरु भक्त नित, कृष्ण तुम्हारी ओर ॥१५॥
प्रेम पंथ अति कठिन है, जिमि खाँडे की धार ।
कंटत गिरत पुनि पुनि चलत, बिरले पावत पार ॥१६॥

दिवस गवाओ खाय के, रात गंवाई सोय ।
कृष्ण नाम लीन्हो नहीं, मुक्ति कहाँ से होय ॥१७॥
धामधनी का ध्यान धर, भूला क्यों जग माँहि ।
जाना है निजधाम को, ताकी है सुधि नाँहि ॥१८॥
प्राणनाथ सद्गुरु धनी, तारतम्य जग लाय ।
ब्रह्मसृष्टि के हेतु प्रभु, प्रकटे जग में आय ॥१९॥
ब्रह्मतेज निजनाम है, मन्त्र तारतम जोय ।
नाशे भ्रम भव सिन्धु के, मिलन प्रीतम सों होय ॥२०॥
पार-पार सब कहत हैं, ना कोई पावे पार ।
बिन जाने निजनाम के, कौन उतारे पार ॥२१॥
प्राणनाथ इत आयके, खोल दियो निज द्वार ।
राह बताई धाम की, जो हद बेहद पार ॥२२॥

* सवैया-खण्ड *

मोर मुकट बनमाल हिये, कानन में कुन्डल छवि छाई ।
शोभा तन पे पीताम्बर की, मुरली अधुरन मध्य सुहाई ॥
रूप त्रिभंगी श्याम किये, अरु वाम अंग राधे छवि पाई ।
यह छबि ले उर माँहि बसहु, श्री लाल के लाल सुआस लगाई ॥१॥

भौंहें बक्र सु चंचल नैन, अरु अधर विलोक बिम्ब बलहारी ।
भाल बिशाल कपोलन की छवि, दंत देख दामिन द्युतिहारी ॥
मोर मुकट मुरली कर में, अरु तन सोहे पीताम्बर प्यारी ।
सांवरो रूप बसहु नैनन, श्रीलाल के लाल सु आस हमारी ॥२॥

भाग्य बड़े ब्रज भूमी के, जहँ पूरण ब्रह्म प्रकट हुय आये।
नन्द यशोदा के भाग्य बड़े, जिन गोद में कृष्ण से लाल खिलाये॥
लीला करी ब्रज में बसके, सब गोपी ग्वालन मोद मनाये।
श्री लाल के लाल भाग्य बड़े, जो राधे कृष्ण उर माँहि बिठाये॥३॥

धनश्याम सो मोर भयो मनमोर, प्रीतम सो नित आस सुमोरी।
चन्द्रानन पर बलिहार सदा, हेरत है जिमि चन्द्र चकोरी॥
चरणाम्बुज में मन मधुप लग्यो, लेत सुबास बहोर बहोरी।
चित्रा नन्दन का तुम्हें बन्दन, यशुदा नन्दन ब्रषभानु किशोरी॥४॥

करुनाकर करुनाकर नित ही, श्री युगल स्वरूप सदा मम ओरी।
भाल विशाल हिये बनभाल, कर मुरली छवि देत बहोरी॥
यह सुन्दर रूप अनूप महा, अति चंचल लाल लाड़ली भोरी।
चित्रानन्दन का तुम्हें बन्दन, श्री श्यामल श्याम राधिका गोरी॥५॥

तोयं पुत्र तासु सुत के सुत, तासुत भख मुख कीर्ति भली है।
मीन सुता सुत तासुत नासा, दन्त की छबि मनु कुन्द कली है॥
मीनाक्ष मनोहर बांकी छटा, अरु अधर विलोकत बिम्ब फली है।
श्री लाल के लाल विशाल निहाल, हिये नन्दलाल सु कीर्त लली है॥६॥

करुणानिधि कोर कृपा की करहु, हे कृष्ण करहुं विनती कर जोरी।
जग जाल विशाल निहार सभी, तब लग्यो चित्त श्याम तुम ओरी॥
प्रीत पुरातन प्रकट भयी अब, जोरी सु परम प्रेम की डोरी।
मम उर नाथ निवास करहु, नित श्यामल श्याम राधिका गोरी॥७॥

खेलत कृष्ण यशोदा आँगन, होत मगन मन में महतारी।
कबहूं मात की गोद में खेलत, नाचत कबहूं बजावत तारी॥

कबहूं प्रतिबिम्ब निहार डरें, अरु मांगत कबहूं चन्द्र निहारी।
नन्दलाल के हाल विशाल लखे, तब से तन को सुधि बुद्धि विसारी॥८।

प्रभु दर्शन की हिये आस विशाल, सु नागर तार हृदय यह ठानी।
नन्द के धाम गयी ब्रजबाम, कही यशुदा सों सखी मृदुबानी॥
उटकत गाय मेरी मैया, इन श्याम के हाथ लगे लेब जानी।
जाव लाल दुह आवो गाय, श्री नन्द महिर मन में मुस्कानी॥९॥

संग सखी ले श्याम चली, हीत मगन मन में अति भारी।
निरखत जात श्याम छबि को, अरु आसन पर ढिग जाय बिठारी॥
गाय दुहे अपने कर सों, सखी मोहन मुख मारत पय धारी।
धन्य सखी अरु श्याम तुम्हें, यह प्रीत विशाल टरे नहिं टारी।१०।

एरी सखी मेरे बैन सुनहु, तुम यासे श्याम गात भयो कारो।
भादों की रैन घरी सुघरी, अरु कृष्ण पक्ष कारो अँधियारो॥
काली निशा में प्रकट भयो, श्री नन्द नन्दन यशुदा को दुलारो।
श्री लाल के लाल सुनहु ब्रजबाल,याही सो श्याम गात भयोकारो।११।

दूजी सखी अस बैन कहे, अब आली सुनहु यह मतो हमारो।
श्याम घुसे कालीदह में, जहँ वास कियो कालिह फन वारो॥
श्याम अंग में मेरी सखी, जब विषधर ने मारो फुसकारो।
विशाल सु ब्याल के ज्वाल से हाल, श्री नन्दलाल अंग भयो कारो।१२।

तीजी सखी तब बोल उठी, सजनी सुनहु विचार हमारो।
हम सबही ब्रज बनितन कर, नन्द लाल बनो अंखियन को तारो॥
काजल कोर के बीच निवास, भयो विशाल सोय गुण भारो।
कजरारी अँखियन में बसे, नित याही सो श्याम अंग भयो कारो॥१३।

परम प्रवीण विशाल सखो, तब ज्ञान भरे अस बैन उचारो।
रस शृँगार केर रंग श्याम, जासु देव श्री कृष्ण प्यारो॥
अति लावण्य राशि उज्जल छवि, भासत जिमि घन रंग निहारो।
नन्दलाल विशाल रूप छवि सागर, यासो श्याम अंग लखे कारो॥१४॥

खोजत शेष महेश दिनेश, सुरेश विरंच निरंतर ध्यावें।
नारद शारद व्यास गणेश, थके नारायण पार न पावें॥
खोजत वेद पुराण थके, नहिं पावे पार अगम्य बतावें।
सोई कृष्ण यशुदा जननी के, भय से नैनन नीर बहावें॥१५॥

कोई सिद्ध मुनी सिद्धी के बल, चाहे हिमगिर खेलहिं खेल उठावे।
सागर सात पयोनिधि के, भर अन्जुल में चाहे पी जावे॥
भूमि का भार धरे कर पें, चाहे पृथ्वी के रजकण गिन जावे।
पर कृष्ण नाम की महिमा का, वर्णन करके कोई पार न पावे॥१६॥

पूरण ब्रह्म श्री कृष्ण के गुण, नहिं गाय सके विरंच चतुरानन।
पार न पाई गजानन ने, अरु कह न सके हैं ज्ञानी षड़ानन॥
वेद ऋचान आनन हारे, गाय थके जाको सहसानन।
आनन कोटि विशाल थके, तो मोहि दियो विधि एकहि आनन॥१७॥

नैन वही प्रभु को निरखे, अरु बैन वही प्रीतम गुण गावे।
ध्यान वही जो धनी सों धरे, अरु प्रेम वही जो प्रभुहि रिझावे॥
कर्ण वही प्रभु कथा सुने, अरु चित्त वही चित चोरहि पावे।
श्री लाल के लाल सु पाद वही, पूरण ब्रह्म के पंथ को ध्यावे॥१८॥

बाल भये पलना पौढे, संग मात ने पौढ के दूध पिलाये।
पौढत ही पुनि प्रौढ भये, तरुणी संग दिन हंस खेल गमाये॥

पौढ़त पौढ़त उमर गयी, पुनि चिता पे पौढ़न के दिन आये।
धाम अखण्ड के पौढ़न हारे, ताहि न कबहूं चित्त में लाये ।।१९।

तू भूल रहा नर दुनियां में, दिन चार के हैं यह ठाट ठटा।
छुट जैहै धन परिवार सभी, छुटहैं तेरे सब महल अटा ।।
जा चेत अरे क्यों भूल रहा, सिर ऊपर छाय रही काल घटा।
निजनाम विशाल जपो मनसे, जानो तबहीं जग फन्द कटा ।।२०।।

वारि बिना सरिता सूनी, अरु सूनी पति बिन नार कहावे।
सूना सरोवर हंस बिना, सुगन्ध बिना नहि सुमन सुहावे ।।
सूनी रैन सु चन्द्र बिना, अरु दीप बिना घर सूनो दिखावे।
प्रेम बिना प्रभु के सु विशाल, त्यों ही सूनी नर देह कहावे ।।२१।।

सखि याद करहु निजधाम कहां, पक्ष पचीस परम सुखकारी।
धाम, तलाब, निकुञ्ज निरख, अरु नहर महाबत की छवि प्यारी ।।
माणिक गिर पुखराज जहां, यमुना सरि चौगास सु भारी।
अष्ट सु भूमि विशाल तहां, अरु सागर अष्ट सु लेव निहारी ।।२२।।

रंग महल की याद करहु जहाँ, अनुपम खण्ड दशो छवि पाई।
मूल मिलावा कि भूमि प्रथम, परम दिव्य शोभा अधिकाई ।।
कंचन रंग सिंहासन ऊपर, राज रसिक श्यामा छवि छाई।
लख हाल विशाल, निहाल भये, जहां द्वादश सहस सखी समुदाई।२३।

आनन्द धाम की ब्रह्मप्रिया तुम, पूरण परमानन्द विसारी।
धाम बिहाय के आय यहां सब, भूली फिरहि गली गलियारी ।।
विपत्ति पड़ी बिरहाग्नि जरी, अब शीघ्र लेव सुधि राज हमारी।
प्रेम परीक्षा पूर्ण भई प्रभु, लेव बुलाय सु धाम मझारी ।।२४।।

धाम धनी मम टेर सुनहु, अब कीजे कृपा नाथ मम ओरी।
भूल भई हमसे प्रीतम, जो माँग्यो खेल नाथ बरजोरी॥
राज रसिक 'मम दोष' क्षमहु, हे प्रीतम आस आपसे मोरी।
विपत्ति, विशाल, प्रियन की हरहु,अब वेग बुलावहु धाम बहोरी॥२५।

धाम अखण्ड की ब्रह्मप्रिया, तुम पहले ब्रज माँहि पधारी।
संग धनी तब आये तहाँ, यशुदा के लला श्री कुंजबिहारी॥
गोपिन के प्रीतम प्रिय माधव, श्रीकृष्ण सों प्रेम रह्यो अतिभारी।
गुण गावें सदा वह मोहन के, क्षण एकहु श्याम न जाय बिसारी॥२६।

चकई चन्द्र की भाँति सदा, यशुदा नन्दन कर रूप निहारी।
टेर सुनी जब मुरली की, तृणवत जग छोड़ चली ब्रजनारी॥
धिक्कार तुम्हें हे ब्रह्मप्रिया, क्यों भूल रही हो अबकी बारी।
निजनाम निजानन्द को बख्शी, अब वेग सुनो श्रीराज पुकारी॥२७॥

आवन कह परसों को गये, अरु बीत गयी बरसों नहिं आये।
गाँव की ग्वालिन छोड़ चले, मथुरा नगरी उनको मन भाये॥
प्रीत तजी ब्रजबनितन सों, कुबरी सों नेह नवीन लगाये।
ब्रजबाल विशाल दुखी ब्रज में, नित जोहत बाट श्यामनहिं आये॥२८।

बरसत नैन को मेह विशाल सु, झरसत तन जिमि जरत जवासो।
उन कालिन्दी कूल कदम्बन पे, अब मधुपन कीन्हो आय सुबासो॥
ब्रज बनितन को ब्रज में बसबो, उन श्याम बिना भयो अगिनअवासो।
पपिहा नहिं पानी को प्यासो सखी,कहूं व्यथित वियोगिन प्राणन प्यासो

ज्ञान को मान बढ़्यो उर में, तब श्याम कियो मन माँहि विचारी।
ब्रज में ब्रजबनितन को ऊधव, समझैयो ज्ञान को भेद उचारी॥

जाबो चले तुम शीघ्र सखा, है विकल विशाल बिरज की नारी।
दीजो उपदेश जाय ब्रज में, श्री राधे हे बृषभानु कुमारी ॥३०॥

लाये सन्देश भलो ऊधव, तब राधे विहंस अस बैन उचारी।
रहे याद सु ज्ञान प्रवीण महान, आये हो प्रेम कुटीर मंझारी॥
योग की पूंजी संभाल रखो, जाको लेवें न छीन ब्रज की नारी।
ब्रजबाल विशाल, विरहानल में, जल जाय न ज्ञान की ग्रन्थ तुम्हारी॥३१॥

मोह तजहु मनमोहन को, अब ज्ञान हमार चित्त में दीजै।
योग के आठहु अंग सखी, सोई धारण नित्य हृदय में कीजै॥
मन को करके एकाग्र सभी, निर्गुण माँहि सदा चित्त दीजै।
ले योग वियोग को दूर करहु, बैन विशाल सुदृढ़ कर लीजै॥३२॥

राधा कहें ऊधव मतहीन, यह मोह नहीं है प्रेम हमारो।
रोम-रोम घन श्याम रमे, बिठराऊँ कहाँ वह ब्रह्म तुम्हारो॥
मन मोर लग्यो मनमोहन में, दूजो नहिं मन संग हमारो।
योगिन से भली मैं वियोगिन ही, चित्रा नन्दन मोय श्याम प्यारो॥३३॥

घनश्याम माँहि मन मोर लग्यो, अब और न दूसर देव सुभावे।
जेहि मधुकर अम्बुज रस चाखो, क्योंकर आक ताहि पुन भावे॥
पात किये अमृत जेहिने, दूजो रस क्यों ताहि सुहावे।
श्री लाल के लाल छोड़ चिन्तामणि, को पाहन में चित्त लगावे॥३४॥

प्रीतम से रहे प्रीत सदा, अरु गोपी गोबिन्द के गुण गावे।
छोड़ के ऊधव रूप सुसुन्दर, निराकार में को चित लावे॥
कामधेनु विलगाय मूढ़मति, को अजया को क्षीर दुहावे।
श्रीलाल के लाल छोड़ गजबाहन, को पुनि खर की पीठ चढ़ावे॥३५॥

आकार हीन वह शून्य ब्रह्म, नहिं जाको कोई रूप दिखावे।
सून्य का योग न होय कभी, चाहे यतन बहु भाँति करावे॥
ऊधौ वियोग हमारो सही, जब चाहों योग युगुल छवि पावे।
सुन बैन विशाल, सु राधा के, ऊधव मन में चाह बढ़ावे॥३६॥

मोय बेग दिखाओ योग सखी, कैसो वह तुममें श्याम तुम्हारो।
श्रीराधे श्याम का ध्यान कियो, प्रकट्यो सखि अंग में नन्द दुलारो॥
जेहि सखि उत उंगली राधे करें, उतही संग दीखें श्याम प्यारो।
लख विशाल, दंग हुये ऊधब, राधे हे धन्य सु धन्य उचारो॥३७॥

अति पावन प्रेम लख्यो ब्रज में, तब ज्ञान की भूल गई चतुराई।
गावत गुन गोपाल विशाल, फिरहिं ब्रजगलियन धूम मचाई॥
भूल गये मथुरा नगरी, ब्रज में रह बहु दिवस बिताई।
धन्य कहयो ब्रज गोपिन को, जिन परम प्रेम कर पंथ चलाई॥३८॥

योग माया मय मण्डल में, लख वृन्दावन सुन्दर सुखदाई।
बृक्षलता वन पुष्प अनेक, कहे कवि को शोभा अधिकाई॥
लख चन्द्र शरद को पूनो को, मनमोहक श्याम ने बन्शी बजाई।
चित्रा नन्दन कर जोर कहे, तिहुं लोकन में बन्शी धुन छाई॥३९॥

प्रभु विश्व विमोहनी बन्शी को, बृन्दावन में जब श्याम बजाई।
मानव की यहाँ कौन कहें, जाने सारी रैन यमुना विलमाई॥
अति विकल भई ब्रज की नारी, मुरली धुनि हृदय में समाई।
दीन विशाल गुण गाय कहें, श्री कृष्ण की ओर चली हैं सिधाई॥४०॥

नहि पैहो मूड़ मुड़ारे प्रभु, नहि पैहो शीश जट के रखाये।
नहि पैहो तीरथ यज्ञ किये, नहि पैहो पूनो को गंग नहाये॥

नहि पैहो वेद पुराण पढ़े, नहि पैहो चन्दन तिलक लगाये ॥
दीन बिशाल गुण गाय कहें, प्रभु को पैहो अति प्रेम लगाये ॥४१॥

नहि संग चले धन धाम कछू, छुट जैहें तेरे सब महल अटारी ।
छुट जैहैं कुटुम्ब परिवार सभी, नहि संग चले तेरी प्राणन प्यारी ॥
क्यों भूल रहा इनमें मूरख, तू अन्त समय चले हाथ पसारी ।
दीन बिशाल कर जोर कहें, जरो निजनाम कही मानो हमारो ॥४२॥

* कवित्त-खण्ड *

मोर मुकट धारो कर बाँसुरी सुधारो,
तन पीत वसन प्यारो छवि अनुपम तुम्हारो है ।
भाल सु बिशाल, हिये बीच सोहे बनमाल,
गज शावक सी चाल मन लागत सु प्यारो है ॥
सुन्दर सुजान सोहे मन्द मुस्कान,
अरु मुरली की तान सुत मोर मनु हारो है ।
सुन्दर बदन पर, श्यामले से तन पर,
नन्द के नन्दन पर लगन हमारो है ॥१॥
ध्यावत रमेश विधु शारद महेश शेष,
गौरी गणेश गुन बार-बार गायो है ।
नारद अरु व्यास वेद-वेद ऋचा मानी हार,
शुक-शनिकादि जाको पार नहीं पायो है ॥
सोई साक्षात पूरण ब्रह्म श्री कृष्ण चन्द्र,
भक्तन के हेतु ब्रज प्रकट हुय आयो है ।

बने गोपाल ब्रज गोपिन को प्रेम देख,
गेह-गेह जाय प्रभु गोरस को खायो है ॥२॥

कीन्ही जल जोर घन घोर महा भारी वृष्टि,
संकट शचीवर आज ब्रज ऊपर डारो है।
विनती विशाल करे गोपी और ग्वाल बाल,
विपदा से नाथ अब आयके उबारो है ॥
सुतके पुकार उरधार के विचार एह,
धरनीधर कर तब धरनी धर आयो है।
मानहु करि-कर ते छीन कर कंज लियो,
ऐसो कर करे छवि कामना कर प्यारो है ॥३॥

श्याम सात साल के गिरराज सात कोस को,
दिवस सात धारो कियो काम भारो है।
नन्द लाल वारो, विशाल शैल भारो,
शंका महान गोपी गोप जन विचारो है ॥
वृषभान की कुमारी हस बैन अस उचारी,
कहा बड़ो काम कियो कुञ्ज के बिहारी हैं।
सुनो सखी मेरी बात हम नाहीं गरुआत,
गिर समेत उर धारे गिरधारी हैं ॥४॥

शरद का पूर्ण चन्द्र देख श्री कृष्ण चन्द्र,
वृन्दावन जाय श्याम बाँसुरी बजाई है।
रस भरी सुन तान भूल गयो सारो ज्ञान,
घोर तिहुं लोकन में बन्शी की छाई है ॥

शारद दिनेश देश गौरी गणेश शेष,
नारद महेश निज ध्यानहु भुलाई है।
चित्रा के नन्दन आज श्री नन्द नन्दन जू,
ऐसी मनमोहनी सु बांसुरी बजाई है ॥५॥

कोई उठ दौरी कोई भूल गई पौरी,
बिशाल कोई बौरी कौरी कदम्ब डाल को।
कोई खोले बार, कोई भूषन बिसार,
कोई तजके शृंगार चली भूली सुध माल की ॥
कोई दौरी घाटन में, कोई धाई कानन में,
कोई फिरे कुञ्जन में दशा थी बिहाल की।
सारी ब्रजबल कठपूतली सी नाच रही,
ऐसी आज बांसुरी बाजी नन्दलाल की ॥६॥

बाजी उमगाई, बाजी द्वार छोड़ धाई,
बाजी मारग भुलाई बाजी व्याकुल फिरे आंगन में।
बाजी ने बिसारा धीर बाजी ने फाड़ा है चीर,
बाजी के उठी है पीर चैन नहीं मन में ॥
बाजी घर छोड़ भाजी बाजी डर छोड़ भाजी,
बाजी बर छोड़ भाजी व्याध लगी तन में।
वाली कहें बाजी बाजी कहें कहां बाजी,
बाजी कहें बांसुरी बाजी बृन्दावन में ॥७॥

बांसुरी बजाई योगमाया प्रकटाई,
कीन्हीं न विलम्ब ऐसी करी प्रभुताई है।

काल माया नाश, ब्रह्माण्ड को विनाश,
जिमि भानु के प्रकाश से रजनी नशाई है ॥
अनुपम अपार नाहीं शोभा को सुमार,
राधा माधव बिहार को रासमंडल रचाई है ।
रचना विशाल जहाँ जाय मिली ब्रजबाल,
रास मंडल में हाल सखि दिव्य तनपाई है ॥८॥

परम छवि धारी आज बाँकुरे बिहारी,
रूप को निहारी बलिहारी कोटि काम है ।
बृन्दावन कानन की शोभा अपार लख,
चिन्तामणि मयी जहाँ सोहत सुधाम है ॥
जोरी बृषभानुजा अरु हलधर के भ्रात की,
हर ब्रजबाम संग एक श्री श्याम है ।
रासहु रचायो कियो सखिन मन भायो,
श्री लाल के लाल हरी श्याम सखिन हाम है ॥९॥

जोहत सुबाट अरु विलोकत बटोई सदा,
अजया का भोज नाहीं अजहूं पठाई है ।
शशि रिपु बरस और युग बर सूर्य रिपु,
हर रिपु भयो अति सोय दुखदाई है ॥
वेद अरु नक्षत्र ग्रह जोर के अर्ध कर,
सोई अब खाऊँ ऐसी मोर मन भाई है ।
व्यथित विशाल, ब्रजनारी बिहारी बिन,
वनिता विचारी बियोगिन बनाई है ॥१०॥

तजके ब्रजधाम, गये जब से घनश्याम,
लौट आये न ब्रजधाम ऊधो पाती पठाई है।
प्रीत की अनीत ते प्रतीत अब ऐसो भयो,
वह श्याम कोई और बसे मथुरा जो जाई है॥
प्रीतम हमारो, मुरली मोर पृच्छ वारो,
जिन इन्द्र मान मारो सुन्दर रासहू रचाई है।
चित्रा के नन्दन, श्री नन्द नन्दन जू,
मेरो गिरधारी उर धारी भयो आई है॥११॥

आरती (श्री राज जी की)

श्री राज चरण भज रे, स्वामी राज चरण भज रे।
पूरण ब्रह्म श्री कृष्ण का, नित उठ ध्यान धरे॥टेक॥
कंचन रंग सिंहासन, सोहत सुखधामा। स्वामी सो०....
राज रसिक छवि भारी, वाम अंग श्यामा॥१॥ श्रीराज....
अक्षर ब्रह्म अविनासी दर्शन को आवे। स्वामी....
रूप किशोर निहारी, आनन्द अति पावे॥२॥ श्रीराज....
पक्ष पचीस बिहारा, सुन्दर सुखकारी। स्वामी सुन्दर....
ताल निकुञ्ज सुधामा, महावन छवि प्यारी॥३॥ श्रीराज....
गिर पुखराज निहारो, यमुना की धारा। स्वामी यमुना....
है चौगान सुभारी, झिलमिल झलकारा॥४॥ श्रीराज....
अष्ट सिन्धु भू अष्ट की, महिमा है भारी। स्वामी महिमा....
परम प्रकाश सुहावे, कोटिन रवि वारी॥५॥ श्रीराज....
जो जन ध्यान लगावे, विलसय निजधामा॥ स्वामी विल०....
आवागवन नशावे, पावे वर श्यामा॥६॥ श्रीराज०....

आरती (प्राणनाथ जी की)

आरती प्राणन प्यारे की, श्री केशव नन्द दुलारे की ।।टेक।।

रूप है दिव्य कांति वाला, गले में मुक्तन की माला ।
श्रवण में कुण्डल झलकाला ।
हर्षित सुन्दर-साथ, नवावे माथ धन्य तुम्हें नाथ --
शरण नित जग उजियारे की । श्री केशव नन्द दुलारे की ।।१।।

स्वामिनी तेज कुँवरि नामा, विराजी वाम अंग श्यामा ।
साथ सब करते परनामा ।
सुसुन्दर अलक, भाल पर तिलक, सूर्य सम झलक—
ललित छवि पंजे वारे की, श्री केशव नन्द दुलारे की ।।२।।

दरश को नर नारी आवें, आरती हर्षित हो गावें ।
निरख छवि सब बलि-बलि जावें ।
आप पर ध्यान, करे गुणगान, मधुर मुस्कान—
धनी पूरण ब्रह्म प्यारे की, श्री केशवनन्द दुलारे की ।।३।।

परम छवि उर से न निकले, देवता दर्शन को तरसे ।
गगन से सुमन बहुत बरसे ।
बाजे सुन्दर चंग, और मृदंग, साथ सब संग—
मधुर धुन जै-जैकारे की, श्री केशव नन्द दुलारे की ।।४।।

विराजे पन्ना जी धामा, श्री जी महामति सुखधामा ।
करें पूरण मन के कामा ।
सेवा में छत्रशाल, रहे ततकाल, ये विनय विशाल,—
टेर सुन दीन विचारे की । श्री केशवनन्द दुलारे की ।।५।।

* विविधा खण्ड *

पद—1.

(परम हंस श्री युगुल दास जी भाण्डेर की जागनी शृंखला)

परम हंस श्री युगुल दास जी, प्रकटे पुण्य धरा पर थे।
शतक अष्ट दश बुन्देल खण्ड में, वासी दतिया नगर के थे॥
जन्म विषय में सदा आपके, जीवन बीतक मौन रही।
लिखूं वही जो सन्त जनों के, मुख से वाणी गयी कही॥
श्रीवास्तव कायस्थ कुली में, ब्रह्म वासना प्रकट भई।
भद्रावती पुण्य नगरी में, शादी हो ससुराल हुई॥
धर्म परायण पतिव्रता थी, पत्नी श्री सबूर बाई।
कोख पवित्र इन्हीं से देखो, प्रकटे प्रिया दास भाई॥
थे पटवारी जमींदार के, तीक्षण बुद्धि प्रवीण रहे।
एक संत की परख द्वारा, युगला सखि तुम गये कहे॥
ऊँच बिचार हुये आपके, जीवन काया पलट गई।
छोड़ दई पुनि आप नौकरी, कृष्ण चरण दृढ़ भक्ति भयी॥
दर्शन दे श्री प्राणनाथ जी, श्री निजनाम प्रदान किया।
हुये पवित्र धन्य-धन्य देखो, कृष्ण चन्द्र जी दरश दिया॥
कमलावति की ब्रह्मवासना, आप आपनी पहिचानी।
होते दर्शन परमधाम के, प्रकट भयी सतनी बानी॥
तपो भूमि भांडेर नगर में, सदा साधना मगन रहे।
श्री प्राणनाथ के सन्देशों पर, धर्म दूत बन डटे रहे॥

धर्म प्रसारण हेतु आपने, किया ग्रन्थ रचनाओं को।
जगा दिया संगीत लहर से, सोई ब्रह्म प्रियाओं को॥
राजाओं में सम्मान पात्र बन, उत्तम आभा चमक गई।
आपहि की झाँसी की रानी, शिष्या लक्ष्मी बाई भई॥
हुये अनेकों शिष्य आपके, चेतन चतुर प्रवीण हुये।
ज्ञान प्रकाश ग्रन्थ रच चेतन, जन मानस के चन्द्र हुये॥
दास बिहारी शिष्य आपके, वाणी बुद्धि विशारद थे।
परम हंस श्री हीरादास जो, चर्चनी ज्ञान सुनायक थे॥
परम हंस श्री जीवन दास, महाराज आपके शिष्य भये।
करते भ्रमण जो यमुना के तट, पारोंली के निकट गये॥
सुन्दरता लख यमुना तट की, आश्रम वहाँ बनाया था।
श्री कल्यान दास को यहाँ पर, जीवन शिष्य बनाया था॥
शिष्य हुये कल्यान दास के, देखो चतुर दास महाराज।
जनपद इटावा मध्य जागनी, लाये ब्रह्म प्रियन के काज॥
जाग्रत कर श्री सरूपदास को, सौंप जागनी कार्य दिया।
इसी जागनी मध्य अनोखा, गजराज दास ने काम किया॥
चमत्कारिक लीलाओं द्वारा, जनमानस को जगा दिया।
मोहनदास, गोविन्ददास ने, जागनी में सहयोग किया॥
इन्हीं गजराज दास के देखो, हुये शिष्य वर मोतीदास।
इटावा मध्य बराहार में, जिनका रहा सदा ही बास॥
उत्तम वंश दीक्षित कुल में, पितु बल्देव प्रसाद सुनाम।
लगन रही नित राज चरण में, जपा प्रेम से श्री निजनाम॥

श्री गजराज दास गुरुवर की, इन पर कृपा विशेष रही।
अनुभव ज्ञान पाय बन मोती, सीप स्वाति चरितार्थ भई ।।
संगीत प्रेमी रहे आप श्री, सुन्दर पद अनेक रचकर।
भजन पच्चीसी ग्रन्थ आपने, जन मानस हित छपवाकर ।।
मुक्ति हेतु मुक्ति सागर, ग्रन्थ दूसरे की रचना।
दे साहित्य जागनी लाये, पूर्ण किया अपना सपना ।।
इन्हीं पूज्य गुरु मोती दास के, वर्तमान में शिष्य विशाल।
दूजे शिष्य राज सेवक जी, संत वेश धारो तत्काल ।।
वर्तमान इस जागनी में अब, जानो संत दास गोपाल।
जो भद्रावति मन्दिर पर रहे, महंत पद पर प्रति पाल ।।
शिष्य इन्हीं के कुञ्जबिहारी, धर्म सु भूषण परम महान।
कार्य जागनी में रत रहते, करते जन-जन का कल्यान ।।
दूसरे संत दयाल दास जी, जो बृन्दावन रहे विराज।
सन्त दास के प्रपौत्र शिष्य, जानो परम लाट महाराज ।।
जनपद इटावा मध्य पृथ्वीपुर पावन ग्राम सुहाई है।
परमहंस श्री लाट नाम से आप प्रसिद्धी पाई है ।।
उनके परम शिष्य परमानन्द, संत शिरोमणि परम उदार।
वर्तमान जागनी कारण में, लीन्हा है अपने सिर भार ।।
परमधाम वासी पंडित श्री कृष्ण दत्त शास्त्री लो जान।
युगुल दास शिष्य धारा में लीजै इन्हें सूर्यवत मान ।।
जीवन भर संघर्ष किया था, दिया आप साहित्य अपार।
इन्हीं सभी ब्रह्म मुनियों पर, विशाल हो पुनि-पुनि बलिहार ।।★

पद–२. चेतावनी

जगत में जिसका परम पुरुष रखवारा।
मार सके न कोई दुनिया में जो प्रभु पालन हारा ॥टेक॥
एक बधिक आखेट हेतु, ले तीर कमान चला भाई।
वह कुत्ते चार शिकारी ले, इक जंगल में पहुंचा जाई ॥
वहाँ एक कुञ्ज में बैठी हुई, एक हिरणी को देखा भाई।
श्री गर्भवती हिरणी प्यारी, वह मोटी ताजी दिखलाई ॥
वह प्रसव पीड़ से दुखित महा, उस झाड़ी में विश्राम किया।
चलने को नहीं अब शक्ती थी, इसलिये वहीं पे मुकाम किया ॥
यह देख शिकारी बेदर्दी, अपने मन दृढ़ संकल्प लिया।
मारूंगा मैं इस हिरणी को, हृदय में यह प्रण ठान लिया ॥
दुखिया दीन मृगी पर देखो, नाहीं नेक विचारा ॥ जगत में....॥१॥
फिर सुनो ध्यान देकर सज्जन, क्या बधिक ने चरित विचारी है।
पूरब दिशि जाल लगाय दिया, पश्चिम दिशि अग्नि बारी है ॥
उत्तर की ओर लगाय दिये, जो कुत्ते चार शिकारी है।
फिर तान सरासन दक्षिण दिशि, आया खुद आप संभारी है ॥
यह देख विचारी हिरणी का, हृदय से धीरज छूट गया।
अपने मन में यह समझ लिया, बस आज विधाता रूठ गया ॥
पूरब में जाल लगा भारी, पश्चिम में अग्नि प्रचण्ड बड़ा।
उत्तर दिश स्वान शिकारी है, दक्षिण में बधिक बे पीर खड़ा ॥
इतने भारी संकट में अब, किसका करूँ सहारा ॥ जगत में....॥२॥
हिरणी ने मन में समझ लिया, सिर काल हमारे आ छाया।
लेकिन ईश्वर की माया का, ना पार किसी ने भी पाया ॥

सच्चे हृदय से याद किया, मम कष्ट हरो हे ब्रजराया।
हो तीन लोक के नाथ आप, प्रभु त्रिभुवन पति है कहलाया॥
प्रहलाद भक्त जब याद किया, तब उसका कष्ट मिटाया था।
नरसिंह रूप धर पल भर में, हिरणाकुश मार गिराया था॥
दुख भरे बैन सुन पाँचाली के, सभा में चीर बढ़ाया था।
हुई भुजा थकित दुशासन की, बैरी का गर्व नशाया था॥
अब की हिरणी खड़ी पुकारे, काहे मोय बिसारा॥ जगत में....॥३॥
अब सुनो ध्यान देकर सज्जन, प्रभु ने है अनोखा काम किया।
झट मेघ बुलाये नभ ऊपर, अरु पानी को बर्षाय दिया॥
सब अनल बुझाय दिया पल में, पुनि वायू का संचार किया।
लीलाधारी गिरधारी ने, आँधी में जाल उड़ाय दिया॥
फिर व्याघ्र रूप बन आप शीघ्र, स्वानों का अहार किया देखो।
पुनि गदा हाथ ले बनवारी, मारा है बधिक नीच देखो॥
इस कितने भारी संकट में, सबसे है फन्द कटा देखो।
बच गयी बिचारी हिरणी है, परमेश्वर की लीला देखो॥
दीन बिशाल उन्हीं प्रभुवर का, करते नित्य सहारा॥ जगत में....॥४॥

दोहा-प्रकटे कृष्ण हैं जेल में, गोकुल पहुंचे आय।
यशुदा है बड़भागनी, पुत्र हुये ब्रजराय॥

पद-२.

प्रकटे हैं कृष्ण कन्हैया, यशोमति मैया मगन मन भारी है॥टेक॥
ब्रज के मगन सभी नर नारी, प्रकट भये श्री कुञ्जबिहारी।
हैं प्रभु अन्तरयामी वह राधा स्वामी। मगन मन भारी है॥१॥

ब्रज वासी सब खुशी मनावें। गन्धर्व लोग कृष्ण गुण गावें ।।
नन्द महिर के द्वारे, मचे जैकारे। मगन मन भारी है ।।२।।
शिव ब्रह्मादिक जाको ध्यावे। महा विष्णु बहु ध्वान लगावें।
सोई प्रभु नन्द घर आये, बजत हैं बधाये। मगन भई भारी है ।३।
कृष्ण जन्म को उत्सव छायो, दान बहुत नन्दराय लुटायो।
विशाल आस हमारी, चरण चितधारी, मगन मन भारी है ।।४।।

पद—४.

अरे सुन्दर रूप बनाय, बनाय जाने कुच में विष लपटाय लियो ।टेक।
नन्द द्वार जब पहुंची पूतना।
यशुदा ने लियो बुलाय, बुलाय। जाने कुच में··· ।१।
कृष्ण को मारन के हित आई।
श्याम रहे मुस्काय, मुस्काय ।। जाने कुच में··· ।२।
यशुदा गृह कारज कों धाई।
जाने अवसर लीयो पाय हो पाय ।। जाने कुच में··· ।३।
पलना ढिग जब गई पूतना।
कृष्ण को लियो उठाय, उठाय। जाने कुच में··· ।४।
स्तन दोऊ कर श्याम पकड़ लये।
रही है दूध पिलाय, पिलाय। जाने कुच में··· ।५।
दूध संग हरि प्राण खींच लये।
दीन विशाल रहे गाय, हो गाय। जाने कुच में··· ।६।

—●●—

पद–५.

खेलत गेंद मुरारी, मनमोहन सांवरिया ॥टेक॥

मारी गेंद कृष्ण जी ने जब गिरी कालीदह जाई।
श्री दामा यों कहे कृष्ण देव गेंद हमारी लाई।
कूदे कालीदह मझारी ॥ मनमोहन साँवरिया..... ॥१॥

सुनके शब्द नागिनी चौकी तुरतहिं हरि ढिग आई।
मोर मुकट पीताम्बर सोहे, शोभा वरण न जाई॥
नागिन छवि पर है बलिहारी॥ मनमोहन सांवरिया..... ॥२॥

बार-बार श्रीकृष्ण चन्द्र को नागिन रही समुझाई।
जल्दी भाग जाव तुम बेटा सुनहु वचन चितलाई॥
सोवत मेरो है विषधारी॥ मनमोहन सांवरिया..... ॥३॥

हंस के कही कृष्ण नागिन से जल्दी लाव जगाई।
पूँछ मसक दई कृष्ण चन्द ने, विषधर उठो भहराई॥
तन में छायो क्रोध अपारी॥ मनमोहन सांवरिया..... ॥४॥

लपट्यो नाग कृष्ण के तन में, मन में कर अभिमान।
तबहि कृष्ण ने बदन बढ़ायो, शिथिल भयो बलवान॥
तन से छुट गयो है विषधारी॥ मनमोहन सांवरिया..... ॥५॥

है अक्षरातीत प्रभु प्यारे, नटवर कुञ्ज बिहारी।
दीन विशाल कहें कर जोर, युगल चरण चितधारी॥
मेरो पति राखो बनवारी॥ मनमोहन सांवरिया..... ॥६॥

—●●—

दोहा—सखियां सब विनती करहिं, चीर देहु ब्रजराज ।
नगिन सभी जल में खड़ी, आवत हमको लाज ॥

पद्य—६.

प्यारे यशुदा ललन, दीजो मेरे वसन नन्द छैया ।
विनय सुन लो मेरी हे कन्हैया ॥टेक॥

दीन होकर के सखियां पुकारी, नाथ हम सब हैं जल में उघारी ।
दीजो मेरे वसन, मान लीजो किशन, नन्द छैया ॥
विनय सुन लो मेरी हे कन्हैया ॥१॥

बोले तबहि नन्द के लाला, चीर लेवहु सभी ब्रजबाला ।
काहे होती विकल, जल से आवहु निकल नन्द छैया ॥
विनय सुन लो मेरी हे कन्हैया ॥२॥

सखियन ने मनहिं विचारी, टेक पकड़ी श्री बनवारी ।
चीर लीजे अपन, सोची मन में सबन, नन्द छैया ॥
विनय सुन लो मेरी हे कन्हैया ॥३॥

जल से सखियां निकल करके आई, जोड़ के हाथ विनती सुनाई ।
चीर दीन्हे किशन, सखियां मन में मगन नन्द छैया ॥
विनय सुन लो मेरी हे कन्हैया ॥४॥

नग्न होके कभी न नहाना, श्याम दीयो सखिन के ज्ञाना ।
इच्छा करहौं पूरण, जाओ अपने सदन, नन्द छैया ॥
विनय सुन लो मेरी हे कन्हैया ॥५॥

दोहा—यमुना जल भरने गईं, इक दिन ब्रज की नार।
जल भर जब घर को चलो, मिल गये नन्द कुमार॥

पद—७.

चली जल भरने गुजरिया लैके गगरी ॥टेक॥
जल भरने को चली ग्वालिनी यमुना जो पर आई।
भर लये घड़ा सभी सखियन ने घर को चली सिधाई।
मिल गये मारग में सांवरिया॥ लैके गगरी० ॥१॥

रस्ता रोक लई सखियन की कहें श्री बनमाली।
मुँह दिखलाय देव मोय प्यारी सुनलो घूंघट वाली।
छुड़हौ तब तेरी डागरिया॥ लैके गगरी० ॥२॥

सास ननद ने हमको भेजी जल भरने को आई।
मारग में हमको छेड़ो, सुनो श्याम ब्रजराई॥
मेरो बारो है उमरिया॥ लैके गगरी० ॥३॥

बहुतक कही एक न मानो, नटवर कुञ्ज बिहारी।
ग्वालिन गले डाल के बहियाँ दई कन्चुकी फारी॥
सिर की फोरी है गगरिया॥ लैके गगरी० ॥४॥

तबहिं ग्वालिनी मनमोहन से बोली यों रिसयाई।
दीन विशाल कहें मोहन से पिटवैहों कान्हाई।
चल भई गोकुल की नागरिया॥ लैके गगरी० ॥५॥

दोहा—देन उरहना सखी सब, गई नन्द के धाम ।
कहैं यशोदा मात सों, है अन्याई श्याम ॥

पद—८.

ढोट यशोदा तेरो लाल हो गया ।
यमुना के तीर माता मोको मिल गया ॥टेक॥
मारग में मिले मोको मोहन मुरारी ।
बहियां मरोर मेरी चोली है फारी ॥
मटकी हमारी मोहन फोर तो गया ॥
यमुना के तीर माता मोको मिल गया ॥१॥

बहुतक कही उन एक न मानी ।
इंडुरी छुटाय फेंकी यमुना के पानी ॥
ऐसो अन्याई नन्द लाल हो गया ॥
यमुना के तीर माता मोको मिल गया ॥२॥

कहते हैं कृष्ण सुनो माता हमारी ।
झाड़ी में उरझो फटी चोली और सारी ।
रपटी है सखी घड़ा फूट तो गया ॥
यमुना के तीर माता मोको मिल गया ॥३॥

कृष्ण के बचन सुन सखी मुस्काई ।
कहते विशाल चली घर को सिधाई ॥
उन्हीं घनश्याम से हो प्यार हो गया ॥
यमुना के तीर माता मोको मिल गया ॥४॥

★★

दोहा—निज निज घर से सब सखी, कर करके शृंगार।
मटकी लेकर के चली, दधि बेचन ब्रजनार ॥

पद—६.

चलो दधि बेचन गुजरिया लेके गगरी ॥टेक॥
ललिता सखी विसाखा राधा, चन्द्रावलि सी प्यारी।
सब सखियो में सखी, शिरोमणि है वृषभानु दुलारी ॥
जाकी बारी है उमरिया ॥ लेके गगरी० ॥१॥
सखियां हैं गौलोक धाम की, आय भई ब्रजनारी।
जिनको देखे चन्द्र लजावे, शोभा की उजियारी ॥
लागी मोहन सों सुरतिया ॥ लेके गगरी० ॥२॥
पीताम्बर की सारी सोहे, गले बीच है हार।
दधि बेचन के काज, सहेली करके चली शृंगार ॥
सिर पर धर लीन्हीं गगरिया ॥ लेके गगरी० ॥३॥
दधि के घड़ा शीश पर धर लये, सखियाँ चली सिधाई।
दीन विशाल कृष्ण गुण गावें, बन में पहुंची जाई।
मिल गये मारग में सांवरिया ॥ लेके गगरी० ॥४॥

सवैया—

सिर पर धर गोरस की मटकी, दधि बेचन हेत चली ब्रजनारी।
धेनु चरावत ग्वालन के संग, मग बीच मिले श्री कुञ्जबिहारी ॥
घेर के गैल खड़े मनमोहन, मांगत बन को दान मुरारी।
दीन विशाल गुण गाय कहे, लई कृष्ण ने रोक सभी ब्रजनारी ॥

★★

दोहा—दान लेन के हेत प्रभु, घेर लई ब्रज बाम।
सखिन शिरोमणि राधिका, कहे सुनहु हो श्याम ॥

पद—१०.

छोड़ो मोहन मेरो गैल कहे बृषभान दुलारी रे ॥टेक॥
चराते बन-बन में गाई। दिखावत मोको ठकुराई।
दान न पावो कान्हाई ॥
तुमको लाज न आवे, मोहन घेरो नारी रे ॥
छोड़ो मोहन..... ॥१॥
धूप तुमहूं सहती प्यारी, फिरो वन-वन मारी मारी।
शीश पर मटकी लई धारी ॥
देनो दान सखी तब छोड़ूँ गैल तिहारो रे ॥
छोड़ो मोहन..... ॥२॥
रहे क्यों निज कीरत गाई, दही बेचे यशुदा माई।
बड़े दस गोअन से भाई।
एकहि जात अहीर को, हम तुम सुनो मुरारी रे।
छोड़ो मोहन..... ॥३॥
समझ के बोलो तुम प्यारी, गोप सब गोकुल के भारी।
सबन से बड़े नन्द प्यारो ॥
दीन विशाल लिख रहे, कृष्ण की लीला प्यारी रे।
छोड़ो मोहन..... ॥४॥

दोहा—पुरुषोत्तम श्री राज जी, कृष्ण भये ब्रज आय।
चरित करें प्रभु नित नये, प्रेम विवश ब्रजराय ॥

पद—११. रसिया

दधि को मांगत मोहत दान घेर लई सब ब्रजनारी रे ॥टेक॥
दान न दीयो ब्रजनारी, सखी तब पकड़ी बनवारी।
दान दे अबहूं तू प्यारी ॥
तबही श्याम मसक दई चोली दीन्हीं फारी रे।
दधि को मांगत..... ॥१॥
श्याम ने बहिंया छकझोरी, दही की मटकी उन फोरी।
दान तू दे मोको गोरी ॥
टोर गले को हार, श्याम ने फारी सारी रे।
दधि को मांगत..... ॥२॥
कहे तब ऐसे ब्रजनारी, दान अब लेवो गिरधारी।
देर मोय होती है भारी ॥
जीते तुम्हीं श्याम हारी, बृषभानु दुलारी रे।
दधि को मांगत..... ॥३॥
दान प्रभु दधि को ले लीन्हों, जान तब सखियन की दीन्हों।
बहुत हैरान श्याम कीन्हों ॥
दीन बिशाल कथ कहें, गई फिर सब ब्रजनारी रे।
दधि को मांगत..... ॥४॥

●●

दोहा—बन में घेरत गंल हैं, नटवर नन्द कुमार।
देन उरहना सखी सब, पहुंची यशुदा द्वार॥

पद—१२. रसिया

माता ढीट भयो तेरो लाल गंल मेरी मोहन घेरी रे॥टेक॥
शीश धर गोरस की मटकी, गई मारग वन्शी वट की।
श्याम ने बाँह पकड़ झटकी।
लेकर ग्वाल संग मोहन ने मारग घेरी रे॥ माता०।१।
मसक दई चोली गिरधारी। फाड़ दई रेशम की सारी।
शीश की मटकी भुइ डारी॥
गले को टोरो हार श्याम ने, करी न देरी रे॥ माता०।२।
श्याम सों कहती महतारी, ढीट तुम मोहन हो भारी।
घेरते क्यों बन में नारी॥
तबहीं श्याम कहें सुन माता बानी मेरी रे॥ माता०।३।
उरझ गई झाड़ी में सारी, रपट गई बन में ब्रजनारी।
शीश से गिर गई तब झारी॥
झूठ उरहना देत मात यह आई सखीरी रे॥ माता०।४।
सुनी मनमोहन की बानी, सखी सब मन में हर्षानी।
चली घर अति ही सुख मानी॥
कहें लाल के लाल कृष्ण से प्रीत घनेरी रे॥ माता०।५।

★★

पद–१२. कव्वाली

काहे प्यारी से प्रीतम बिछुड़ने लगे,
श्याम तुम रूठ जाओ तो मैं क्या करूँ ।।टेक।।
आस टूटी मेरी जा छुपे हे कहाँ,
छोड़ हमको दिया है तो मैं क्या करूँ।
प्यारी मुरली की धुनि हमने जबसे सुनी,
भाये संसार हमको है बिलकुल नहीं।
आके प्रभु से मिलीं प्यारी सखियां सभी,
छोड़ तुम ही चले हो तो मैं क्या करूँ ।।१।।
खोजती बृन्दावन में हैं सारी सखी,
पूँछती बन के बृक्षों से देखे प्रभू।
देखे होवें प्रभू तो बताओ मुझे,
हाल बतलाओ तुम हाय मैं क्या करूँ ।।२।।
जवाब पाती नहीं दुःख पावें महा,
रोती सखियां सभी हैं बिलखती महा।
टेर सुनलो मेरी आके विपदा हरो,
रास फिर से रचाओ तो मैं क्या करूँ ।।३।।
आस मेरी प्रभू न निराशा करो,
देके दर्शन प्रभू कष्ट मेरे हरो।
दीन कहते विशाल प्यारी सखियां कहे,
आओ ब्रज के बिहारी तो मैं क्या करूँ ।।४।।

●●

पद–१४.

लगा था इक दिन मथुरा में दरबार ॥टेक॥

मथुरा में दरबार लगा जहँ गये कृष्ण ब्रजराई है।
शंकर जी का था धनुष धरा, उसे दीयो प्रभू चढ़ाई है॥
था शब्द हुआ विकराल महा, दुष्टन ने अति भय खाई है।
यों कहें असुर सब मनही मन, घर ही में मौत बुलाई है॥
टोर धनुष फिर आगे बढ़ गये, नटवर नन्द कुमार॥ लगा० ।१।

दरबाजे पर जाकर देखा कुविलिया पीड़ गज भारी है।
प्रभु के आते ही टूट पड़ा, उत संभले कृष्ण मुरारी है॥
बल मुष्टिक का प्रहार किया, गज पीछे हटा बलधारी है।
फिर पकड़ सूंड मनमोहन ने, धरती पर दियो पछारी है॥
बलराम कृष्ण दोनों ने फिर, लीन्हे हैं दन्त उखार॥ लगा० ।२।

गज मार कृष्ण बलराम दोऊ, आगे को चले सिधाई है।
इनको आते ही देख कंस ने, दीयो आदेश सुनाई है॥
बध शीघ्र करो इन दोनों का, क्यों बृथा ही देर लगाई है।
झट मुष्टिक अरु चाणूर चले, यों कृष्ण सो बैन सुनाई है॥
मल्ल युद्ध हम तुम से होवे, कह रहे भूप हमार॥ लगा० ।३।

बलराम भिड़े हैं मुष्टिक से, चाणूर से कृष्ण मुरारी है।
बलराम कृष्ण हैं बालरूप, यह असुर भयानक भारी है॥
हो रहा युद्ध विकराल महा, क्यों जीते असुर गमारी है।
दोनों असुरों को दे पटका, धरती पर दियो पछारी है॥
इन मल्लों के मरते ही फिर, मच गयो हाहाकार॥ लगा० ।४।

फिर गये वहाँ पर कृष्ण चन्द्र, जहं कंस सिंहासन भारी है।
उसको सिंहासन से नीचे फिर, प्रभु ने लियो उतारी है॥
केश पकड़ के कंस नृपति को, मारा कृष्ण मुरारी है।
सुर करे सुमन वर्षा नभ से, सब कर रहे जै जै कारी है॥
दीन विशाल कृष्ण गुण गावें, उनहीं पर बलिहार॥ लगा० ।५।

पद–१५.

उठ जाग बाबरे चेत जरा, इस जीवन का न ठिकाना है।टेक।
श्रीकृष्ण चन्द्र से प्रेम करो, जो आवागमन मिटाना है॥
तू पाप कपट कर धन जोड़े, यह साथ न तेरे जायेगा।
धन दौलत माल खजाना यह, सब पड़ा यहीं रह जावेगा॥
क्यों भूल रहा इनमें मूरख, तोय खाली हाथों जाना है॥ उठ० ।१।
मात पिता सुत अरु भाई, सब झूठी जग की यारी है।
यह अन्त समय छुट जाते हैं, छुटती अपनी प्रिय नारी है॥
कोई साथ न तेरे जावेगा, तोय पड़े अकेला जाना है। उठ० ।२।
झूठी दुनिया में फंस कर, नहिं कृष्ण से प्रीत लगायेगा।
यमदूत पकड़ कर ले जावें, तब कष्ट अनेको पायेगा॥
जब पड़े नरक में जाकर के, फिर पीछे को पछिताना है॥ उठ०।३।
इसलिये विनय सबसे मेरी, धर ध्यान सुनहु मेरे भाई।
कुछ समय निकालो सुबह शाम, श्रीकृष्ण का नाम जपो भाई॥
दीन विशाल कहें प्यारे फिर, परमधाम तोय पाना है। उठ०।१।

★★

पद-१६.

जपो कृष्ण को मुक्ति चाहो जो भाई।
इसी हेत दुनियाँ में नर देह पाई ॥टेक॥
दोहा-पाँच जन्म जो नर करहि, अन्य भक्ति चितधार।
हयग्रीव की भक्ति को, पावे तब नर नार॥
हयग्रीव की भक्ति जो, करे दश जन्म बनाय।
तब नृसिंह भगवान में, प्रीत होय अधिकाय॥
पुराण हरितन्त्र में यह है गाई॥ जपो० ॥१॥
दोहा-करे भक्ति शत जन्म जो, नरसिंह की चितलाय।
सीतापति श्रीराम की, भक्ति तबहिं नर पाय॥
जन्म सहस्त्र श्रीराम की, भक्ति करे मन लाय।
तब नारायण भक्ति को, कठिन माँहि नर पाय॥
मिलती नहीं मुक्ति फिर भी है भाई॥ जपो० ॥२॥
दोहा-नारायण की भक्ति करे, कोटि जन्म धर ध्यान।
तब श्रीकृष्ण के चरण में, उपजे प्रीत महान॥
सात जन्म श्री कृष्ण की, भक्ति करे धर ध्यान।
प्रभु कृपा से तब मिले, तारतम्य का ज्ञान॥
ऐसी कठिन कृष्ण भक्ति है भाई॥ जपो० ॥३॥
दोहा-प्रेम लगाकर के जपे तारतम्य नर नर।
दुख रूपी भव सिन्धु से, सोई पावे पार॥
कृष्ण कृष्ण जपते रहो, मानुष का तन पाय।
दीन विशाल की विनय को, सुनहु सुजन चितलाय॥
पंहो तभी मुक्ति तो मेरे भाई॥ जपो० ॥४॥

पद–१७.

अरे मति भूले ज्ञानी दुनियां के मेले ।टेक।
झूठ सब जग के हैं व्यवहार। झूठ सब सम्पत्ति अरु परिवार॥
करे क्यो इनमें तू अति प्यार॥
उमर तेरी बीते सारी जाही झमेले में। अरे मति० ।१।
संग न तेरे कोई जाय, तेरी प्राणन प्यारी छुट जाय।
साथ तेरे काया भी न जाय॥
अरे तोय जाना होवे, जग से अकेले में॥ अरे मति० ।२।
कठिन दुख रूपी है संसार, पड़ी तेरी नैया है मझधार।
सोच ले तू मूरख बदकार॥
जन्म मत खोवे वृथा, दुनियां के मेले में॥ अरे मति० ।३।
जपो तुम नटवर नन्द कुमार, तभी तेरी नैया होवे पार।
कहत हैं दीन बिशाल बिचार॥
प्रीत मेरी लागी प्यारे नन्द, नन्दोले में॥ अरे मति० ।४।

पद–१८. गजल

दया के नाथ हमको भी, शरण अपनी में ले लेना॥टेक॥
खड़े हम द्वार पर आकर, दया का दान दे देना॥
सुना है आप भक्तो पर, सदा करते दया आये।
आज बारी हमारी है, नहीं हमको भुला देना॥ दया० ।१।
पतित पावन हो तुम स्वामी, अनेकों तारे हैं पापी।
पतित सिरताज मुझको भी, भक्ति का दान दे देना॥ दया० ।२।
अगम भव सिन्धु है भारी, काम अरु मोह है जिसमें।
जान के अपना हे स्वामी, सदा हमको बचा लेना॥ दया० ।३।
सुनो अब टेर बिशाल की, धनी हे धाम के प्यारे।
बहाता अश्रु है स्वामी, कष्ट मेरे मिटा देना॥४॥ दया० ।४।

पद–१९.

राज बोल, श्यामा बोल, पद्मावति पुरी गलियन डोल ।।टेक।।
राधे बोल, कृष्ण बोल, पद्मावति पुरी गलियन डोल ।।
राजजी के तन पर जामा सोहे, श्री श्यामा के तन पर साड़ी अनमोल ।।
राजजी के सिरपर मुकट विराजे,श्रीश्याम के शीश पर मुकटी अनमोल।।
प्राणनाथ प्रभु जहाँ विराजे, श्री निजनाम रस पीजै घोल घोल ।।

पद–२०. मल्हार

चलो री सहेली अपने निजधाम कों जी ।
एजी जहाँ कोटिन, रवि उजियार ।। चलो० ।टेक।
इतै तो अक्षर उत निजधाम है जी ।
एजी जहाँ बिच में, यमुना धार ।। चलो री० ।१।
रंग महल सोहे दश खण्ड को जी ।
एजी जामे पूरब, दीरघ द्वार ।। चलो० ।२।
मूल बिलावा सोहे, पहली भोम में जी ।
एजी जहाँ चौसठ खम्भ निहार ।। चलो० ।३।
हेम सिंहासन बैठे श्यामा राज हैं जी ।
एजी जहाँ जग मग मणि उजियार ।। चलो० ।४।
छोड़ के सुन्दर ऐसो अपने धाम को जी ।
एजी सब भूली जगत मंझार ।। चलो० ।५।
सुनके संदेशा चलियो अपने धाम को जी ।
एजी अब सद्गुरु करी पुकार ।। चलो० ।६।

पद-२१. कव्वाली

देखो ब्रह्माँगनाओ जरा जाग कर,
इस जगत में भुलाना गजब हो गया ॥टेक॥
भेजा सन्देश प्रभु ने तुम्हारे लिये,
ध्यान उस पर न लाना गजब हो गया ॥
सबने मिल करके माँगा श्री राज से,
दुःख रूपी जगत देखने के लिये।
बरजा प्रीतम ने हर बार सब साथ को,
कहा उनका न माना गजब हो गया ॥१॥
आके भूली सभी ब्रह्मसृष्टी यहाँ,
दुख उठाये बहुत सबने इस विश्व में।
तब जगाने को आये निजानन्द जी,
अरु श्री जी का आना गजब हो गया ॥२॥
किया है उदय सूर्य निजनाम का,
अरु मिटाया तिमिर घोर अज्ञान का।
अब गई है निशा प्रात का है समय,
साथ सब जाग जाना गजब हो गया ॥३॥
तोड़ दो शीघ्र माया के भ्रम जाल को,
आप अपने को सब वेग पहिचान लो।
सिंह होके वृथा क्यों बने स्यार हो,
जोश तुममें न आना गजब हो गया ॥४॥

पद–२२. कव्वाली

जाग जाओ जरा धाम के वासियो,
इस जगत में तो अपना गुजारा नहीं ॥टेक॥
भूले संसार में साथ सुन्दर मेरे,
धाम की ओर तुमने निहारा नहीं ॥
करके वादा चले खास निजधाम से,
वेग आवेगी हम खेल को देख कर।
यहाँ आकर के भूली हो अब जाल में,
प्राणपति को है तुमने निहारा नहीं ॥१॥
सुन के वाणी न दौड़ी जो निजधाम को,
श्री जी को उन्हीं सबको धिक्कार है।
नीचा सिर हो वहाँ प्रभु के दरबार में,
उसको तुमने तो सोचा विचारा नहीं ॥२॥
हो रही है परीक्षा यहाँ प्रेम की,
कहा था कि जैसा श्री राज ने।
उस परीक्षा में हम सब सफल न हुये,
प्रेम प्रभु के बराबर हमारा नहीं ॥३॥
चेत जाओ जरा होश में आओ अब,
यह सुहाना औ सुन्दर समय आ गया।
जोर के हाथ विशाल, विनय कर रहा,
अब भुलाना वो निजधाम प्यारा नहीं ॥४॥

★★

॥ इति श्री ॥

* कवि परिचय *

जन्म एवं परिवार परिचय—कविवर विशाल जी का जन्म चैत्र कृष्ण द्वितीया वि० सं० २००२ में इलाहाबाद मण्डल (वर्तमान में कानपुर) के पश्चिम में जनपद इटावा (वर्तमान औरैया) यू०पी० के अन्तर्गत राठ-पनवारी मार्ग (औरैया-कन्नौज मार्ग के मध्य) में सहार से बिधूना जाने वाली सड़क पर पड़ने वाले पावन ग्राम निवादा धाँदू में सूर्य वंशीय शाक्य कुल में श्री लालमन जी के यहाँ पूजनीया माँ चित्रवती की कोख से हुआ। कविवर विशाल जी के सम्बन्ध में निम्न दोहे प्रचलित है—

"द्वय सहस्त्र से द्वय अधिक, विक्रम प्रचलित साल।
चैत बदी तिथि दौज को, प्रकटे कवी विशाल॥
चित्रवती माता इनकी, पिता लालमन जान।
सूर्य वंश में शाक्य कुल, तामें उपजे आन॥
मातु पिता ब्रह्मलीन हैं, सगे भ्रात जे चार।
प्रेमवती पत्नी इनकी, प्रगट भये दो कुमार॥
परमहंस मोतीदास जी, इनके हैं गुरुदेव।
तारतम्य समझाय के, खोल दिये सब भेव॥"

रचनाएँ—(१) श्री कृष्ण कीर्तन मुक्तावली (प्रकाशित)
(२) अथ श्री कृष्ण पुष्पाञ्जलि भजनमाला (प्रकाशित)
(३) अथ श्री कृष्णानन्द सागर—एक बृहद महाकाव्य

काव्यगत विशेषताएँ—इनके काव्य में काव्य सौन्दर्य का अनूठा चित्रण विद्यमान है। काव्यानुशीलन से परिलक्षित होता है कि अलंकार, रस आदि से भरपूर इनके काव्य में वे सब गुण विद्यमान हैं जिनका काव्य जगत में समावेश अनिवार्य होता है।

* शिखरणी छन्द *

यशोदा के प्यारे, गोपिन दुलारे प्रेम में।
विराजो राधा स्वामी, करुणा निधे मय हृदय में ॥
दिखाओ वो प्यारी, सूरत सलोनी साँवरी।
मिटाओ हे स्वामी, 'विशाल' दुख प्रभु जगत के ॥

* छन्द *

श्रीराज निजजन काज, हे महाराज मम पूरण धनी।
कर जोर बिनती करहुं, करु करुनानिधि कृपा घनी ॥
है आपसे मम आस प्रभु, निज जान अब अपनाइये।
निर्मल सु 'विशाल' बुधि करहु, दाया परम दरसाइये ॥१॥

श्रीकृष्ण पूरणब्रह्म प्रभु, सर्वेश सर्वाधार हो।
गोपाल यशुदालाल तुम, बृषभानजा आधार हो ॥
सूरत सलोनी साँवरी, झाँकी दिखाओ आन के।
विनती 'विशाल' सुन लीजिये, हे नाथ अपना जान के।२।

श्री देवचन्द्र सद्गुरु मेरे, तुमसे विनय हर बार है।
श्री प्राणनाथ पूरण प्रभू, सुनिये सु परम पुकार है ॥
छत्रसाल 'विशाल' टेर सुन, बल बुद्धि मोको दीजिये।
गुरुदेव चरणों शीशधर, अब बेग दाया कीजिये ॥३॥